Chap-2

:: द्वितीय अध्याय ::

: शैलेश मटियानी का कहानी-साहित्य : नारी-चरित्र के विशेष परिप्रेक्ष्य में

:: द्वितीय अध्याय ::

: शैलेश मटियानी का कहानी साहित्य- नारी-चरित्र के विशेष परिप्रेक्ष्य में :

प्रास्ताविक :

मटियानीजी हिन्दी के एक अत्यन्त सशक्त किन्तु उपेक्षित कहानीकार हैं, क्योंकि अधिकांश कहानी-साहित्य के आलोचकों ने "आँचलिक कहानियों" के खाते में उन्हें डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री की है। कहानी-आंदोलनों तथा उनसे सम्बद्ध फतवों से न जुड़ने के कारण इस दृष्टि से काफी नुकसान हुआ है, तो दूसरी तरफ उनके रचनाकार को इससे शक्ति मिली है। और बातों में न जाकर मटियानीजी इस बात पर विश्वास करते हैं कि "कहानी" में "कहानीपन" होना चाहिए, बस।

कहानी के सन्दर्भ में मटियानीजी का कहना है — "समस्त सृजनात्मक कलाएं एक आदमी की कहानी कह सकने से ही जुड़ी है ; क्योंकि कहानी सिर्फ आदमी की हो सकती है और आदमी ही कहानी कह सकता है । कहने के प्रकार जरूर भिन्न हैं । " [1]

कहानी कहने का काम कितना कठिन है उसका संकेत मटियानीजी ने कुमाऊं लोकबोली की निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा करवाया है —

"को लाटा काथ-बाथा
सुण काला सु
कांणले चोरि करी
दौड़ डुणा सु । " [2]

— अर्थात् गूंगे तुम कहानी कहो । बहरे , तुम इसे सुनो । अंधा चोरी करके भाग गया है — लंगड़े , तुम इसे दौड़कर पकड़ लो । यह है कहानी । कितना कठिन ? कितना मुश्किल काम ? गूंगे का कहना , बहरे का सुनना , अंधे का चोरी करना और लंगड़े का दौड़ना- ये सब असंभव काम है । मनुष्य की कहानी कहना भी उतना ही कठिन और मुश्किल कार्य है । आदमी को कहना समुद्र और आकाश को कहने से कम कठिन नहीं । जितना कहो उसे , उतना ही "और कहो " "और कहो " कहता सुनाई पड़ेगा ।[3]

मटियानीजी कहते हैं — " कहानी लिखना आदमी को लिखना बन जाए , तब ही माना जा सकता है कि उसे पढ़ते आदमी को पढ़ रहे होने की अनुभूति हो सकेगी । तब ही जाना जा सकेगा कि आदमी के पृष्ठ अपार हैं और इस अपार की ओर इशारा करना ही कहानी की भूमिका बांधना है । " [4]

और कहानी यदि नारी की हो तो उसे कहना और भी

कठिन हो जाता है , पुराण-कथित स्त्री-चरित्र मान्यता के कारण नहीं , बल्कि इसलिए कि सैकड़ों वर्षों से उस पर थोपी गयी निर्योग्यताओं के कारण उसके हृदय में , मनमें , अनेक गोपनीय कोष निर्मित हो गए हैं । और मटियानीजी ने इसी नारी की कथा-व्यथा को अनेक कहानियों में उतारने की एक ईमानदार कोशिश की है ।

मटियानीजी की कहानियाँ :

मटियानीजी के कहानी साहित्य में विषय-वस्तु , शिल्प , परिवेश एवं भाषिक-संरचना की दृष्टि से वैविध्य उपलब्ध होता है । लेकिन इस वैविध्य के बीच भी जो एक समानता लक्षित होती है , वह समानता है उनका मानवीय स्पर्श और मानवीय पीड़ा से उनका निकट का सरोकार । लेखक के पास एक दृष्टि है जो बिना किसी वाद के घेरे में समाये मानवीय पीर को संजोते रही है । उन्होंने हमेशा असहाय, दीन-दुःखी , न्याय-वंचित , दलित-पीड़ित-शोषित मानवता का पक्ष लिया है । उनकी संवेदना-संवलित मानवतावादी दृष्टि सदैव अन्याय के विरुद्ध लड़ती रही है । और हमारे समाज में दलितों की भाँति नारी भी अनेक कारणों से पीड़ित और प्रताड़ित रही है । उसके साथ भी कई तरह के अन्याय होते रहे हैं । फलतः उनकी कहानियों में दर्द एवं पीड़ा के दर्शन सर्वत्र होते हैं । कहीं-कहीं किसी कहानी को ऊपर-ऊपर से देखने पर उसमें हास्य का पुट मिलता है , परंतु जब हम उसके हार्द में झाँकते हैं तो पीड़ा का स्रोत दृष्टिगत होता है ।

शैलेश मटियानीजी स्वयं भी दलित एवं उपेक्षित रहे हैं । यह पहले निर्दिष्ट किया गया है कि xxxxx उनको शैशव में अनेक शारीरिक-मानसिक यातनाओं से गुजरना पड़ा था । परन्तु यह भी उतना ही सच है कि उनको कुमाऊं प्रदेश की रमणीयता और कमनीयता की गोद मिली है । इस धरती के सौन्दर्य ने उन्हें हर तरह से मालामाल किया है ।

फलतः उनकी कहानियों में जहां एक तरफ आक्रोश के स्वर सुनाई पड़ते हैं, वहां दूसरी तरफ उनमें अपनी धरती, अपनी मिट्टी के प्रति एक प्रगाढ़ लगाव भी दृष्टिगत होता है। इस सन्दर्भ में वे कहते हैं : " यह मेरी विवशता ही है कि न चाहते हुए भी मुझे आक्रोश-पूर्ण कृतियां लिखनी पड़ी हैं। अपने दायित्व से मुकर जाने और अपने प्रति पूंजीवादी व्यवस्था तथा पूंजीवोदियों के टुकड़खोरों के अन्याय-पूर्ण दंशनों को चुपचाप सह लेने की क्षमता मुझमें नहीं है। अन्यथा मैं अपनी रचना प्रक्रिया सिर्फ कुमाऊं खण्ड की कथा-उर्वरा धरती तक ही xxxx सीमित रखता। मेरे आत्मिक संस्कार मुझे कुमाऊं-खण्ड की मिट्टी की ओर खींचते हैं, मगर मेरा दायित्वबोध मुझे कहीं अन्यत्र खींच ले जाता है। फिर भी मेरे साहित्य-सृजन की आराध्या, धरती-पार्वती ही है। .... मैं जानता हूं कि धरती मैया की माटी सदैव उर्वरा होती है। उसके आंचल में एक दाना पड़ता है, अंकुराता है, इक्कीस दानों की बाली उसके माथे पर अन्न-मुकुट सी झूलने लगती है। धरती-माटी की इस उर्वरा-परंपरा ने ही कुमाऊं में इस आशिष-लोकोक्ति को जन्म दिया है — ' एक को इक्कीसी है जो, पांचों की पंचासी।' और मैं भी जब-जब कुमाऊं की धरती-पार्वती के स्वरूप को आंखों में संजोये कथा-सृजन की पूर्व-पीठिका को यज्ञ की स्वस्तिक-चिह्न मंडिता वेदी की तरह संवारने लगता हूं, तो ऐसा लगता है कि, एक कथा-बीज जो मैंने कहीं xxxx अपने मन की धरती में रोपा था, वह अंकुरा उठा है और ... और अन्तर्कथाओं की xxxx अक्षर-बालियां मेरी xx लेखनी के माथे झूमने लग गई हैं। और अपने अकिंचन सृजन-श्रम के बदले, अन्न-दानों जैसी तृप्तिदायिनी अंखरोटी पाकर, मैं कृतकृत्य हो उठता हूं, कुमाऊं की धरती-पार्वती के चरणों में नमित हो जाता हूं। "[5]

इस धरती के प्रति एक विशेष संमोहन होने के कारण मटियानीजी की अधिकांश कहानियों का परिवेश यहां से xxxx

अंकुराया है । एक तरफ जहां वे कुमाऊं की सुन्दर-कमनीय धरती पर पले-बढ़े हैं , वहां दूसरी तरफ उन्होंने बम्बई-दिल्ली जैसे महानगरों की खाक भी छानी है और आजीविका के लिए दर-दर की ठोकरें भी खायी हैं । परिणामतः उनकी कहानियों में हमें आंचलिक या ग्रामभित्तीय तथा नगरीय उभय प्रकार के परिवेश की कहानियां उपलब्ध होती हैं ।

मटियानीजी की कहानियों में हमें भोगे हुए यथार्थ के कटु अनुभवों की तिक्तता प्राप्त होती है । फलतः उनकी कहानियों में जहां धरती-पार्वती का प्रेम मिलता है , वहां दूसरी तरफ समाज द्वारा सताये हुए ऐसे लोग , विशेषतः नारी पात्र , मिलते हैं जो बड़ा ही गर्हित जीवन जी रहे होते हैं । इनमें समय और समाज की मार से अपनी नैतिक चेतना को खो चुके हों ऐसे जेलयाफ्ता उठाईगिरे, जेबकतरे , भिखमंगे , वेश्याएं इत्यादि पात्र मिलते हैं । उनके मानस की पहचान के लिए हमें नये नैतिक-बोध को तलाशना होगा ।

"मेरी तैंतीस कहानियां " की भूमिका में लेखक स्वयं अपनी इस चरित्र-सृष्टि के सन्दर्भ में लिखते हैं — " मेरे लेखन में जो तथाकथित उग्रता , अभद्रता और अश्लीलता है ;, वह पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत होनेवाले शोषण के तरीकों से कहीं बहुत अधिक मर्यादित , शिष्ट और श्लील है । हिन्दी के अन्य लेखकों की तुलना में यदि मेरी रचनाओं में अधिक आक्रोश और बौखलाहट है , तो इसका एक मात्र कारण यह है कि मैंने आर्थिक और नैतिक अव्यवस्थाओं के दुष्परिणामों को देखा-सुना ही नहीं , प्रत्युत सीधे भोगा है× भी है ।" [6]

अब तक मटियानीजी की लगभग डेढ़-सौ के करीब कहानियां प्रकाशित हुई हैं , जो निम्नलिखित कहानी संग्रहों में संकलित हैं :—

§1§ मेरी तैंतीस कहानियां

§2§ चील

§3§ हारा हुआ

§4§ भेड़ें और गड़रिये

§5§ बर्फ की चट्टानें — छोटा संस्करण

§6§ दो दुःखों का एक सुख

§7§ अतीत तथा अन्य कहानियां

§8§ कुहरा

§9§ सफर पर जाने से पहले

§10§ महाभोज

§11§ छिद्दा पहलवानवाली गली

§12§ प्यास और पत्थर

§13§ सूखा सागर

§14§ पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां

§15§ सुहागिनी तथा अन्य कहानियां

§16§ बर्फ की चट्टानें — बड़ा संस्करण

उक्त कहानी-संग्रहों में से " मेरी तैंतीस कहानियां " तथा "बर्फ की चट्टानें " § बड़ा संकलन § क्रमशः लगभग 219 और 621 पृष्ठों के संकलन हैं । इन दो संकलनों में मटियानीजी की अधिकांश कहानियों का समावेश हो जाता है । प्रकाशकीय या लेखकीय विवशता या सुविधा के कारण इनमें कई-कई कहानियां दो-दो , चार-चार बार पुनरावर्तित हुई हैं । उदाहरणार्थ "वह तू ही था", ~~ब्लॉक~~ "सीक" , "बाली-सुग्रीव", "दशरथ" , "कालिका-अवतार" आदि कहानियां "मेरी तैंतीस कहानियां " में भी संकलित है और "बर्फ की चट्टानें" §बड़ा संकलन§ में भी संकलित हैं । इस प्रकार "बर्फ की चट्टानें" ,"सीने में धंसी आवाज़", "भेड़ें और गड़रिये" , "प्रेतमुक्ति" , "पापमुक्ति" , "सुहागिनी" आदि कहानियां "बर्फ की चट्टानें" §बड़ा संकलन§ में भी हैं और

अन्यत्र दूसरे संकलनों में भी हैं । कुछ कहानियों के तो दो-दो शीर्षक हैं , जैसे "सावित्री" , "झुरमुट" , "एक शब्दहीन नदी" आदि कहानियां "बर्फ की चट्टानें" [बड़ा संकलन] संकलन में संगृहीत हैं और अन्यत्र इन्हीं कहानियों के क्रमशः "गृहस्थी" , "कठफोड़वा" और "एक सागर " आदि शीर्षक उपलब्ध होते हैं ।

अध्ययन की सुविधा के लिए हम उक्त सभी कहानियों को दो वर्गों में रखते हैं — [अ] पहाड़ी परिवेश की कहानियां और [ब] नगरीय परिवेश की कहानियां । इनमें भी हमारे अध्ययन का लक्ष्य वे कहानियां हैं जिनके केन्द्र में कोई नारी या नारी-समस्या है ।

[अ] पहाड़ी परिवेश की कहानियां :

मटियानीजी की पहाड़ी परिवेश की लगभग तमाम कहानियां "बर्फ की चट्टानें " [बड़ाxक संकलन] कहानी-संकलन में संगृहीत हुई हैं । इस संग्रह में निम्नलिखित कहानियां संकलित हुई हैं —

[1] पोस्टमैन , [2] वह तू ही था [3] आन-बान [4] सीक [5] भंवरे की जात [6] लोकदेवता [7] बर्फ की चट्टानें [8] चिट्ठी के चार अक्षर [9] उसने तो नहीं कहा था [10] सीने में धंसी आवाज़ [11] बिना पूंछ के हनुमान [12] बाली-सुग्रीव [13]दशरथ [14] सतजुगिया आदमी , [15] घर-गृहस्थी , [16] कुसुमी , [17]नंगा , [18] सावित्री , [19] गोपुली गफूरन , [20]कालिका-अवतार , [21] अंतिम -तृष्णा , [22] वीरसम्भा , [23] आकाश कितना अनंत है , [24] पुरवा , [25] काला कौआ , [26] झुरमुट x , [27] एक शब्दहीन नदी , [28] भेड़ें और गड़रिये , [29] नेताजी की चुटिया , [30] शव , [31] मेरा एकलव्य , [32] खरबूजा , [33] बित्ता-भर सुख , [34] रहमतुल्ला , [35] जिबुका , [36] संस्कार , [37] कपिला ,

§38§ भस्मासुर , §39§ रुका हुआ रास्ता , §40§ मिसेज ग्रीनवुड , §41§ चुनाव , §42§ पापमुक्ति , §43§ माटी , §44§ पुरोहित , §45§ प्रेतमुक्ति , §46§ सुहागिनी , §47§ उत्तरापथ , §48§ असमर्थ , §49§ दो दुःखों का एक सुख , §50§ हलाल , §51§ घुघुतिया त्योहार , §52§ छाक , §53§ इतिहास , §54§ अर्द्धांगिनी ।

मटियानीजी स्वयं पहाड़ों के रहनेवाले हैं । उनका शैशव जिला अल्मोड़ा के बाड़ेछीना गांव में व्यतीत हुआ था । बाड़ेछीना , रायछीना , मोरगांव , कमस्यारी , रतन्यारी , मुवाणी आदि गांवों के सैंकड़ों किस्से-कहानियों से उन्हें सीधे गुजरना पड़ा है । अतः उनके कहानी लेखन में एक बहुत बड़ा दायरा इन पहाड़ी परिवेश की कहानियों ने घेरा है । पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि उनकी प्रायः सभी कहानियां जो पहाड़ी परिवेश को लेकर लिखी गयी हैं , "बर्फ की चट्टानें " §बड़ा संकलन§ नामक बृहदकाय संकलन में संगृहीत हुई हैं । यहां उनमें से कुछ कहानियों की चर्चा का उपक्रम है जो विशेषतः नारी-केन्द्रित हैं ।

पोस्टमैन :

"पोस्टमैन" कहानी पहाड़ीपरिवेश की उन स्त्रियों की नियति को रेखांकित करती है जिनके पति फौज़ में नौकरी करते हैं । फौज की नौकरी के कारण घर-परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहती है । यह प्रायः देखा गया है कि गांव का कोई लड़का यदि शहर में अच्छी नौकरी पर लगता है और , और यदि उसके परिवार के लोग खेतीबाड़ी में लगे हैं तो वह परिवार आर्थिक दृष्टया गांव के दूसरे परिवारों से अपेक्षाकृत अधिक उन्नत और सुखी हो जाता है । परिणामतः उसकी पत्नी को भी परिवार में अच्छा मान-सम्मान प्राप्त होता है । पत्नी को वियोग-व्यथा सहनी पड़ती है , परन्तु

पति जब छुट्टियों में लौटता है तब वह प्रेम से मालामाल हो जाती है । पति का प्रेम और भेंट-सौगाद भी उसे खूब प्राप्त होते हैं । किन्तु ऐसी "पलटनिया स्वामी" वाली औरत का मन हमेशा उचाट रहता है, जब उसका पति फौज में होता है और जब लड़ाई छिड़ जाती है, तब उसकी रातों की निंद और दिन का चैन लुट जाता है । इन स्त्रियों की मानसिक स्थिति का वर्णन लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में किया है — " दयाराम"[पोस्टमैन] अकसर देखता कि जहां कहीं भी वह पहुंचता है, पलटनिया स्वामी वाली हर औरत हिरन की-सी आंखें और खरगोश के-से कान बना लेती है । दयाराम की ओर वे ऐसे देखती थीं, जैसे कोई लाम से पधारा हुआ फरिश्ता हो । कंधे पर के खाकी झोले और जेब में खोंसी कलम से लगता, जैसे वह उनके सौभाग्य ~~xx~~ - दुर्भाग्य का विधाता हो । वह लिफाफे या "मन्यौडर" की जगह कहीं तार ले आए, तो .... एक माथे का सिन्दूर पुंछता, दो हाथों की चूड़ियां टूटतीं और गांव-भर में मातम का गिद्ध अपने मनहूस डैने पसार देता । " 7

पहाड़ी गांवों में पोस्टमैन फौज में नौकरी करने वाले जवानों के लिफाफे या मनीआर्डर लाता या कभी जवान की मृत्यु होने पर तार लाता । लिफाफे और मनीआर्डर लानेवाला पोस्टमैन फरिश्ता होता, उसकी खूब आवभगत होती, खूब मान-सम्मान मिलता; लेकिन खुदा-न-खास्ता वह कभी किसीके यहां मृत्यु का "जयहिन्दी तार" ले पहुंचता तो वही देवदूत यमदूत बन जाता था । घर में कोहरम मच जाता था और मरनेवाले की औरत की ओर से उसे खूब गालियां और अभिशाप मिलत ~~x~~ थे । प्रस्तुत कहानी का पोस्टमैन दयाराम इन स्थितियों से गुजर चुका है । एक बार मुवाणी गांव के धनसिंह बिष्ट के बेटे का ऐसा तार वह ले गया था तब मरनेवाले की पत्नी और मां की ओर से उसे बड़े कठोर

वचन सुनने को मिले थे । अतः दयाराम ऐसे तारों से कतराता है । एक बार कमस्यारी गांव के ठाकुर जसौंतसिंह नेगी के नाम का तार आता है । उनका पुत्र पलटन में था । अतः दयाराम बुखार का बहाना बना देता है । पोस्ट-मास्टर पांडेजी वह तार पहुंचाने जाते हैं और बाद में आकर दयाराम से कहते हैं -- " तकदीर का तू कुछ कच्चा ही निकल आया , यार दया बेटे । तार लेकर पधान जसौंतसिंह नेगी के घर तेरी जगह पर मैं गया । अलमोड़ा जो उनकी बेटी ब्याही है , उसके लड़का हुआ है । बेचारों ने खूब आव-भगत की । .... ऊपर से आठ आने दक्षिणा दी कि ब्राह्मण आदमी हो , खुशखबरी लाए हो । ऐसी बढ़िया खीर खिलाई -- पूर्ण तृप्ति हो गई । एक वक्त का सीता भी रख दिया । " [8]

इस कहानी में आलोच्य विषय की दृष्टि से ध्यातव्य यह है कि पहाड़ों में रहनेवाली जिनके पति , पुत्र या भाई फौज में होते हैं उनकी कथा-व्यथा कुछ अलग ही किस्म की होती है । प्रस्तुत कहानी की भागुली और जैंतुली ऐसी ही नारियां हैं ।

वह तू ही था :

यह एक लोकशैली की कथा है । मटियानीजी ने जहां नारी का लक्ष्मी-रूप , माता-रूप , देवी-रूप , संक्षेप में विद्या-रूप लिया है ; वहां उसका कुल्टा-रूप , अविद्या-रूप भी चित्रित किया है । प्रस्तुत कहानी की राधिका एक ऐसी ही चरित्रहीन कुल्टा नारी है । उसका पति हयातसिंह अंग्रेज साहब बहादुर के यहां नौकरी करता था । हयातसिंह जब ड्यूटी पर चला जाता तब राधिका अपने प्रेमी जसौंत-सिंह को बुलाती थी और उसके साथ खूब रंगरेलियां मनाती थी । एक बार हयातसिंह ड्यूटी पर से बीच में आ जाता है । राधिका जसौंतसिंह को बोरी में बन्द कर देती है । हयातसिंह अपने विलायती बूटों से बोरी को खूब पीटता -रगड़ता है । जसौंतसिंह की खूब धुनाई

होती है , पर मारे इज्जत के वह यूं नहीं कर पाता है । हयातसिंह समझदार आदमी है । राधिका को कुछ नहीं कहता । परन्तु राधिका उस दिन से सम्भल जाती है । अब उसका मन हयातसिंह की ओर हो जाता है और उसकी गोद में एक फूल-सा बच्चा आ जाता है । बच्चे के नामकरण-भोज में जसौंतसिंह को भी बुलाया जाता है । हयातसिंह राधिका के कहने पर खीर की थाली लेकर खाता है और कहता है — "बोरे में , पांव से नहीं हिलने , मुंह से नहीं बोलने वाला तू ही था ? " [9] जसौंतसिंह मारे घबड़ाहट के "नहीं-नहीं" कहता है और हयातसिंह बिना खीर परोसे वापस आ जाता है और राधिका को कहता है कि ठाकुर साहब शायद खीर नहीं खाते । इस प्रकार हर बार हयातसिंह कुछ कहता है और ठाकुर के सिर हिलाने पर बिना कुछ परोसे लौट आता है । अन्ततः जसौंतसिंह हयातसिंह के चरणों में गिर जाता है और हयातसिंह उसे क्षमा कर देता है ।

आन-बान :

"आन-बान" कहानी में लेखक ने सिमकुड़ी गांव की पद्मावती और मोतिमा की कहानी को कुछ हास्य-व्यंग्य के पुट के साथ प्रस्तुत की है । पद्मावती खीमसिंह की पत्नी है । बड़ा भाई भीमसिंह खेती-बाड़ी और पशु-पालन का काम करता है । खीमसिंह अल्मोड़ा में किसी फर्म में सेल्समैन है , अतः पद्मावती भी उसके साथ रहने लगती है । मोतिमा भीमसिंह की पत्नी है , वह सिमकुड़ी में रहती है । शहर में रहने के कारण पद्मावती कुछ सुविधा-भोगी हो गई है । अब पहाड़ों की चढ़ाई उसे दुश्वार लगती है । श्राद्ध के दिन चल रहे थे । आप-बड़ाई में भीमसिंह छोटी बहू को कहते हैं कि जब घर में दही है तो बाजार से क्यों मंगाया जाय । फलतः पद्मावती को अल्मोड़ा से सिमकुड़ी जाना पड़ता है । वहां मोतिमा अपनी देवरानी को प्यार तो बहुत करती है , पर दही की बात निकलने पर कहती है कि सारा दूध तो वे अल्मोड़ा बेच आते हैं , फिर दही किसका जमावे ? पद्मावती वापस

लौट पड़ती है , तब जेठ भीमसिंह बीच रास्ते मिलते हैं । मोतिमा को खरी-खोटी कहते हुए बहू पद्मावती को पुनः अपने साथ ले जाते हैं । पहले तो मोतिमा पर खूब गरजते हैं , पर मोतिमा के प्रत्युत्तर पर चुप हो जाते हैं और अपने खिसियानपट में कहते हैं कि आज तो दहीं नहीं है , पर फिर कभी वह खुद जमाके रखेगा तब दहीं की दो ठेकी ले जाना । इस कहानी के द्वारा लेखक यह घोषित करना चाहते हैं कि ~~पहाड़ों~~ पहाड़ों में बाल-बच्चेदार होने पर पुरुष ऊपर-ऊपर से जरूर धौंस दिखाते हैं , पर भीतर से चलन तो गृहिणी का ही रहता है ।

<u>लीक</u> :

यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है । इसमें पितर-लीक पर चलने की बात है । डुंगरी गांव के गोपाल प्रधान की पुत्री जानकी प्रोफेसर कुण्डलनाथ से प्रेम करने लगती है और नौबत शादी तक आती है । पहले तो गोपी प्रधान हिचकते हैं , क्योंकि कुण्डलनाथ छोटी जाति का है — नाथ । भला क्षत्रीय और नाथों में क्या मेल । परन्तु बेटी की जिद और कुण्डलनाथ की विद्या के आगे प्रधान को झुकना पड़ता है । परन्तु हाथी निकल गया और दुम फंस गयी वाली बात होती है । गोपी प्रधान चाहते थे की पुरखों की लीक के अनुसार शादी खूब धूमधाम से हो और कुण्डलनाथ चाहते हैं कि विवाह अत्यन्त सादगी से हो । इस बात पर संबंध टूटने पर था कि कुण्डलनाथ कहते हैं कि ठीक है आपकी पितर-लीक के अनुसार बारात आयेगी , परन्तु शादी के बाद मैं भी अपनी पितर-लीक पर चलूंगा । " मैं यह प्रोफेसरी और प्रतिष्ठा की जिन्दगी छोड़कर , जुआरियों-शराबियों और चरित्रहीनों की मण्डली में जाऊंगा , और अपने बाप-दादों की लीक पर चलते हुए , खूब जुआ खेलूंगा , खूब शराब पिऊंगा और खूब ... "[10] गोपी प्रधान समझ जाते हैं और अपनी आखिरी जिद भी छोड़ देते हैं ।

अस्तु , जहां तक आलोच्य विषय का संबंध है , इसमें लेखक

ने एक नयी लीक चलाई है । गोपी प्रधान की लड़की का अलमोड़ा पढ़ने जाना और फिर कुण्डलनाथ से प्रेम-x विवाह करना देशकाल की दृष्टि से निश्चय ही एक अग्रिम कदम कहा जायेगा । इस कहानी में जानकी के अतिरिक्त एक अन्य नारी-पात्र की भी बात आती है -- वह पात्र है पार्वती का । पार्वती अठारह बरस की कच्ची उम्र में गलती करके हैदरअली कमाल के साथ भाग रही थी । गोपी प्रधान को जब यह मालूम होता है कि पार्वती मजबूरी में भाग रही है तो वह उससे विवाह कर लेते हैं । डुंगरी गांव में खबर पहुंचा दी जाती है कि गोपी पधान ने काठगोदाम में "तीसरी नौली" रख ली । पहाड़ों में बहु-पत्नी-विवाह पद्धति चलती है और एक-एक पुरुष दो-दो , तीन-तीन स्त्रियों से विवाह करता है ।

भँवरे की जात :

कहानी तो पुरुष की भ्रमर-वृत्ति को लकर है , परन्तु उसमें पहाड़ी स्त्रियों के दुःख-दर्द को लेखक ने मानवीय-संस्पर्श के साथ प्रस्तुत किया है । इसमें मुख्यतया चार नारी पात्र हैं --चिणकुली मिरासन , उसकी बेटी कुंतुली उर्फ कोड़ी हुडक्यानी , रुक्मी और उसकी मां । रामसिंह हवलदार कश्मीर की युद्धबन्दी के समय रिलीज होकर घर लौटता है और अलमोड़ा-रानीखेत के बीच ठेके पर ट्रक चलाने लगता है । पत्नी रुक्मी को उसने लतिया-लतिया कर निकाल दिया था और वह अपने मैके के गांव काफली जा बैठी थी । ऐसे में रामसिंह का दिल कुंतुली पर आ जाता है । कुंतुली मिरासन नाचने-गाने का काम करती थी , परन्तु अंग्रेज सरकार के जाने के बाद उसके धंधे में ऐसी ओट आयी कि अब उसे शरीर का व्यवसाय भी xx करना पड़ता है । ऐसे में रामसिंह उसे मिलता है । रामसिंह उसे अपनी पत्नी की तरह रखता है और सारी कमाई उसके हाथों में रख देता है । रुक्मी की मां को जब इस बात का पता चलता है तो वह कुंतुली के पास जाती है , पर कुंतुली की मां चिणकुली उसे निर्दयता-

पूर्वक निकाल देती है । परन्तु समय का चक्कर कुछ ऐसा चलता है कि जाति-बाहर होने के डर से रामसिंह कुंतुली को छोड़कर रुक्मी के साथ रहने लगता है । कुंतुली के आकर्षण से बचने के लिए वह उस रास्ते को ही छोड़ देता है । अतः मां चिनकुली के कहने पर कुंतुली एक दिन काफली पहुंचती है । परन्तु रुक्मी को देखकर उसका मन बदल जाता है । " मैं तो नाच गाके भी ज़िन्दगी ठेल लूंगी , लेकिन तुम कहां तक मायके में पड़ी रहोगी । मैंने अपना दावा छोड़ा ... " ।।

लोकदेवता :

प्रस्तुत कहानी उस समय की है जब चीन ने भारत पर हमला किया था । कुमाऊं प्रदेश के जवान पलटन में भर्ती हो रहे थे । बलभद्दर थोकदार भी चाहते थे कि उनके गांव के जवान सेना में भर्ती हों । परन्तु इस बात को लेकर गांव में कुछ विरोधी स्वर भी उठ रहे थे , स्वयं थोकदार का लड़का रुद्रसिंह भी पलटन में जाने के पक्ष में नहीं था । तब एक दिन छुरी लेकर बलभद्दर अपनी नाक काटने बैठ जाते हैं । उस समय थोकदारनी के जो शब्द हैं एक वीरमाता और क्षत्राणी के गौरव के अनुरूप हैं । यथा -- " अरे , जब सारे गांव-इलाकों से लोगों के बेटे जा रहे हैं , तो हमारे बेटे भी जरूर जायेंगे रणछेत्तर में । औरों की महतारियों ने छाती पिला रखी है तो कोई हमने घुटने पिला कर नहीं पाले-पोसे हैं बेटे ।" [12] और मां की इस बात पर रुद्रसिंह पलटन में भर्ती होने के लिए चला जाता है ।

बर्फ की चट्टानें :

कुमाऊं के गरीब वर्ग के जवान सेना में भर्ती हो जाते हैं । इस पर गांव का एक दुकानदार रतन ठाकुर उन पर फब्तियां कसता है कि दुनिया भर के भिखमंगे और चिलमनगे फौज में भर्ती हो जाते हैं , उनका सारा ध्यान तो अपने घर और बीबी-बच्चों में लगा रहता है , वह भला क्या खाक लड़ेगा ? लड़े तो वह मर्द मराठा , जिसे दमड़ी

छोड़ , अपनी चमड़ी भी प्यारी न हो । पैसे के पीछे मरने वालों की सारी रुस्तमी तो ऐन मौके पर पर्दे खोल जाती है । [13] वस्तुतः रतन ठाकुर की ये बातें ही "बर्फ की चट्टानें " हैं जो कथा-नायक की छाती पर धंसी रहती है । परन्तु आलोच्य विषय की दृष्टि से इस कहानी में हमें कुमाऊं की वे स्त्रियां और उनकी विवशता और विपन्नता मिलती है जिनके बेटे , पति या भाई फौज में होते हैं । कथा-नायक अपने स्वगत-कथन में कहता है —" काश , रतन ठाकुर , तुम इस बात को समझ पाते कि जिनके भाई-बेटे-पति फौज में होते हैं , लड़ाई के दिनों उन सभी के सुख मौत की अशुभ आशंकाएं किस तरह घेर लेती है । उनके लिए त्योहार , उत्सव और मेले सब कितने फीके और उदास पड़ जाते हैं । उनकी हर सांस कैसे एकदम उनके कानों के पास सिमटी हुई रहती है , उन दिनों । " [14]

<u>चिट्ठी के चार अक्षर :</u>

यह एक नारी-केन्द्रित कहानी है । उसकी नायिका दुर्गी नाई जाति की है । गरीब है , छोटी जाति की है । अतः ब्राह्मण-ठाकुरों के बन्दरनुमा बच्चे उसे छेड़ते रहते हैं । ~~अर~~ यथा — "बाहर बसन्ता जन रमे , धोबन-संगत दोय । आंव-गांव की डोमिनी , नाइन सब संग होय ।। " [15] दुर्गी गाय-बकरियां चराने जाती थी और बच्चे उसे परेशान करते थे । ऐसे में परताप ठाकुर नामक युवक उन बच्चों को डांट-फटकार ~~देके~~ देता है । धीरे-धीरे उन दोनों में प्रेम हो जाता है । परन्तु परताप के घर वाले विरोध करते हैं । जात-बिरादरी के लोग विरोध करते हैं । परताप की छोटी बहन का लगन बीत जाता है क्योंकि वर-पक्ष वाले ठाकुरों ने आरोप लगाया था कि कन्या का भाई शोबन नाई का घर-जमाई बनने को तैयार है । दुर्गी को प्रताप का गर्भ रहता है । कलंक को सहते हुए भी वह उसे जन्म देती है । प्रताप फौज में चला जाता है । शोबन दावा ठोकने के लिए कहता है , पर दुर्गी तैयार नहीं होती । दुर्गी का बेटा मधुवा एक साल का हो

जाता है । एक दिन चिट्ठीरसैन जोशीजी महाराज दुर्गी का "मन्यौ डर " और चिट्ठी मरमर×है×× लाते हैं । फौज में जाने के उपरांत प्रताप में नैतिक साहस आ जाता है और वह लाख विरोध के बावजूद दुर्गी को अपनाने के लिए तैयार हो जाता है । निरीक्षर और छोटी जाति की होने के उपरांत इस कहानी में दुर्गी के चरित्र की जो ऊंचाई दृष्टिगत होती है वह ध्यातव्य है ।

<u>उसने तो नहीं कहा था :</u>

यह खिलाई गाँव की कथा है । इस गाँव की लछिमा को "खसम-टोकुवा " का कलंक लगा हुआ है । शादी करते ही जिसका पति मर जाय उसे "खसम-टोकुवा" औरत कहते हैं । लछिमा तीन बार की विधवा है । प्रथम बार सात साल की उम्र में विधवा हुई । दूसरी बार तेरहवें वर्ष में विधवा हुई । तीसरी बार 20-21 वर्ष की आयु में । शेरुमियां दर्जी और मणिहार दोनों था।लछिमा की कहानी सुनकर धीरे-धीरे चूड़ियां चढ़ाने लगा । तब एक दिन लछिमा ने व्यंग्य किया था "--- " मियां , तुम्हें भी कबर तक पहुंचना है क्या ? "[16] जवाब में मियां ने मर कहा था -- " तेरे लिए तो जीते जी कब्रिस्तान में जाने को तैयार×हूं×× , ठकुरानी ? "[17] मियां तो कब्रिस्तान नहीं पहुंचा पर लछिमा के सौन्दर्य से अभिभूत कुंवरसिंह ने उसे बीच में ही उड़ा लिया । लछिमा के कारण कुंवरसिंह और जसवन्तसिंह जानी दुश्मन हो गये । लछिमा दोनों को चाहती थी । दोनों अभिन्न मित्र थे । परन्तु लछिमा के कारण एक-दूसरे को उड़ा देने का प्लान बना रहे थे । एक बार लड़ाई के दिनों में जसवन्तसिंह बुरी तरह घायल हो गया । कोहरा छाया हुआ था । अचानक कुंवरसिंह आया । जसवन्त ने सोचा कि शायद मौके का लाभ उठाकर कुंवरसिंह उसका काम तमाम कर देगा । पर उसने आश्चर्य के बीच देखा कि कुंवरसिंह ने दुश्मन के दो सिपाहियों को मार गिराया जो अन्यथा जसवन्त को मारने वाले थे । "उसने कहा था" की

नायिका ने तो लहनासिंह को अपने पति की रक्षा के लिए कहा था, परन्तु यहां लछिमा ठकुरानी ने अपने पति को अपने प्रियतम की रक्षा के लिए नहीं कहा था, परन्तु कुंवरसिंह फिर भी उस "अनकही" बात को ध्यान में रखकर जसवन्त को ~~बम~~x न केवल बचा लेता है, प्रत्युत अस्पताल में उसकी सेवा भी करता है।

सीने में धंसी आवाज़ :

~~प्रस्तुत~~x प्रस्तुत कहानी की कमला सूबेदारनी का पति लछमन सूबेदार लड़ाई में दुश्मन की गोली से मारा जाता है। तब से भयाक्रान्त कमला के सीने में गोली की आवाज मानो धंस जाती है और वह सपने में भी चौंककर उठ पड़ती है। बेटा आनन्दसिंह भी फौज में भर्ती होना चाहता है। पहले तो कमला मना कर देती है, पर आनन्द के कहने पर कि " मां, पिताजी तो हमारे लड़ाई के मैदान में मारे गए थे, मगर तूने मुझे घर में ही मुर्दा बना दिया है " [18], कमला आनन्द को फौज में भेजने के लिए तैयार हो जाती है। वह सोचती है कि उसका बेटा जब दुश्मन को गोली मारेगा, तभी उसे मुक्ति मिलेगी उस आवाज़ से जो उसके सीने में धंसी हुई है। उसकी पड़ोसन कुन्ता ठकुरानी उसे समझाने भी आती है, पर कमला सूबेदारनी अपने निश्चय में टस से मस नहीं होती है।

दशरथ :

"बिना पूंछ के हनुमान", "वाली-सुग्रीव" तथा "दशरथ" रामलीला से सम्बद्ध कहानियां हैं; जिनमें नारी-चरित्र की दृष्टि से केवल "दशरथ" कहानी ही विचारणीय है। इस कहानी के साधोसिंह सिराही को रामलीला में दशरथ का एक्टर चुन लिया जाता है। अतः वे रामलीला के मैदान के लिए अपना खेत भी दे देते हैं। साधोसिंह के भी दशरथ की तरह तीन पधानियां हैं — बड़ी पधानी कमुली, दूसरे नंबर की पधानी सरूली और सबसे छोटी कलावती। साधोसिंह

को रामलीला में पहली बार चान्स मिला था , अतः रात-दिन "पिये तुम काहे को होत मलिन ? " और " हा राम ! हा राम " करते हुए "भरत-मिलाप" वाले दिन दम तोड़ देते हैं । छोटी पधानी कलावती के पुत्र आनंद को बत्याड़ी गांव से बुला लिया जाता है । तीनों पधानियाँ करुण विलाप करती हैं । छोटी पधानी कलावती के शब्द थे — " हाइ , मेरे आनन्द के बौज्यू ! तुमने तो त्याग दिया था , मगर देख लो , आखिर तुम्हारी झांझी को कंधा लगाने को बत्याड़ी से भरत जैसा मेरा बेटा आनन्द ही आया , हो ! " [19]

<u>सतजुगिया आदमी :</u>

वैसे तो यह कहानी कुमाऊं प्रदेश के शिल्पकारों में आये परिवर्तन को स्थापित करती है , परन्तु उसमें पुरोहित केशवानन्दजी महाराज की पत्नी "पदमावती बौराणी" का चरित्र आया है जो पुरानी पीढ़ी के नारी-सोच को अभिxxxxx अभिव्यक्ति प्रदान करता है । केशवानन्दजी की भैंस मर गयी है और कोई भी चमार उसको खींचने के लिए तैयार नहीं है । हरराम का बेटा परराम सबका नेता बना हुआ है । हरराम को डर लगता है कि कहीं केशवानन्दजी महाराज परराम को अभिशाप न दे बैठे । अतः हरराम और कमलराम नामक दो बूढ़े भैंस खींचने जाते हैं । पहले तो पदमावती "बौराणीज्यू" बहुत बरसती हैं , पर हरराम की बातें सुनकर वह थोड़ी पसीजती हैं और कहती हैं — " शाबाश हरराम शाबाश ! आखिर कुछ भी हो , तू सतजुगिया आदमी है । अब तो इस संसार में से सारे धरम-करम उठते ही चले जा रहे हैं । अपने-अपने कुल-धर्म को लोग तिलांजलि देने लग गये । अरे , सत्य-धर्म ही नहीं रहेगा , तो शेषनाग भगवान को कहां से आधार मिलेगा । थोड़ा-बहुत जो कुछ भी धरम-करम शेष है , वह पुराने समय के लोगों में ही रह गया है , हरराम । " [20] और भैंस को खींचने में इस "सतजुगिया आदमी " की मृत्यु हो जाती है ।

घर-गृहस्थी :

यह कुमाऊं प्रदेश के खाते-पीते भरे-पूरे परिवार की कहानी है । परतिमा चाची पैंसठ में पहुंच गई है । सिर पर पति की छाया नहीं है, पर पूरे परिवार का दायित्व संभालती है । सारे गांववालों के मुख से परतिमा चाची के हाथ-पांवों की बरकत की तारीफ ही सुनने में आती है । परतिमा चाची के चार बहुएं थीं— मोतिमा, देवकी, भगवती और पररबती । परतिमा अपने मीठे वचनों तथा स्नेह से सब बहुओं से कैसे काम लेती है, यह इस कहानी में ध्यातव्य है । साथ ही यह तथ्य भी उजागर हुआ है कि खेती-बाड़ी तथा पशु-पालन के कामों में स्त्रियों की [illegible] हिस्सेदारी यहां नगण्य नहीं है । परतिमा चाची बारी-बारी से बहुओं को अलग बुलाकर [illegible] लाड़-प्यार करती हैं, उन्हें खिलाती-पिलाती हैं । हरएक बहू को ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे सास उसको अन्यों से अधिक चाहती है, अतः वह दिल खोलकर दुगुना-तिगुना काम करती हैं । एक उदाहरण द्रष्टव्य है — " थोड़ी देर बाद जब भगवती पानी की गगरी लेकर लौटी, परतिमा ने उसे भी छाती से लगा लिया ... जितनी मिहनत तू करती है, इतनी जो ये लोग करतीं, तो कुछ और ही रंगत खड़ी होती । ... तू तो हमारे कुटुम्ब की लक्ष्मी है, बहू । तेरा मालिक भी तुझ जैसा ही कारोबारी । चार टके घर में आयेंगे, इसी लोभ से इस्टोर में नौकरी करने लगा । बड़ा कुटुम्ब चलता भी तुम्हीं जैसे लोगों से । यों तो पेड़ के पंछी, बिलों के चूहे भी अपनी-अपनी घर-गिरस्ती संभालने ही वाले ठहरे । " [21]

कुसुमी :

प्रस्तुत कहानी में पहाड़ी जीवन का एक दूसरा आयाम खुलता है । पहाड़ों में छोटी और मध्यवर्गीय जातियों में यदि कोई स्त्री विधवा होती है तो देवर के साथ उसका पुनर्विवाह करवा दिया

जाता है । कुसुमी ऐसी ही एक विधवा है । पति निमोनिया के बुखार में मर गया था । पर सास-ससुर कुसुमी को बहुत चाहते थे । खेती-बाड़ी का सारा काम कुसुमी ही संभालती थी , ऊपर से सास-ससुर की सेवा । ससुर मथनसिंह ऐसी लक्ष्मी-सी बहू को खोना नहीं चाहते थे । अतः वे देवर केसरसिंह से उसका विवाह करा देने की सोचते हैं । केसरसिंह भी इस बात को समझता है , पर उसके भीतर का संकोच जल्दी दूर नहीं होता है । पर अन्ततः वह कुसुमी की ओर खींच जाता है और अपनी "भौजी" का हाथ थाम ही लेता है । पंजाब में इसे "चादर डालना" और गुजरात में इसे "दियरवटा" कहते हैं ।

नंगा :

रेवती शिल्पकार जाति की युवा विधवा है । उसका पति हरिराम गुमानी ठाकुर की जमीन जोतता था । गुमानी को पता था कि हरिराम मरने वाला है । अतः उसने हरिराम को शिल्पकार बस्ती से दूर मकान बनाने के लिए जमीन दी थी । हरिराम की मृत्यु के बाद वह रेवती को अपने मोहजाल में फांसता है । रेवती गुमानी ठाकुर के आसरे थी । करती भी क्या ? उसे गुमानी का गर्भ रहता है । गुमानी घरेलू दवाइयां भिजवाता है , पर गर्भ नहीं गिरता । आखिर यह तय होता है कि रेवती बच्चे को जन्म देगी और बाद में कोसी में उसे बहा देगी । आखिर के दो-तीन महीने बीमारी का बहाना बनाकर रेवती घर में ही पड़ी रहती है । बच्चे को जन्म देते समय तक उसका इरादा वही था , परन्तु जन्म देने के बाद उसका दूध जोर मारता है । औरत रेवती पीछे रह जाती है , महतारी रेवती जीत जाती है । अपने बच्चे के भविष्य के लिए वह पंचायत करती है , पर गुमानी अपनी ताकत के बल पर सबको अपने पक्ष में कर लेता है । केवल रेवती का चचिया ससुर आखिर तक उसके पक्ष में रहता है । पर एकतरफा फैसला होता देख चल पड़ता है । पंचायत रेवती को माफीनामा पर अंगूठा लगाने को कहती है । तब रेवती का पुण्य-प्रकोप फूट पड़ता है "..." पंच

महाराज लोगों , हंसों की पांत तो जरूर गु वा गई , मगर कौवे की जात अपना धरम नहीं छोड़ेगी । जिस दगाबाज ने थूक के चाट लिया, उसकी जमीन में पांव रखने से मर जाना बेहतर । होगा कहीं ईश्वर , तो कभी-न-कभी मेरा इन्साफ वही करेगा । मैं तो अपनी सन्तान की हत्या खुद नहीं करूंगी । ठकुरानी नहीं , शिल्पकारनी हूं । मिहनत-मजदूरी से गुजर करूंगी । .... मगर हूं मैं×हरहरम×× अगर मैं हरराम की घरवाली और इस नस्वा की महतारी ... पी रखा है मैंने भी अगर अपनी महतारी का दूध — तो आज के दिन से इस गुमानी ठाकुर की जमीन और मकान में हगने-मूतने भी नहीं जाऊंगी ।"[22] इस प्रकार भरी पंचायत में न केवल गुमानी को , बल्कि पंचों को भी वह नंगा कर देती है ।

<u>सावित्री :</u>

यह कहानी "गृहस्थी" नाम से भी प्रकाशित हुई है । सावित्री मिरासिन है । उसकी मां कलावती उसे मिरासिनों-सी सीख देती रहती है कि उल्लू के पट्ठे मर्दों से पैसे कैसे ऐंठने चाहिए , परन्तु सावित्री में भीतर कहीं भले घरों की बहू-बेटियों जैसी लालसा है । गाने-बजाने का पेशा छोड़कर , घर-गृहस्थी बसाने की ललक उसमें अक्सर प्रकट हो जाती है । बलराम ठाकुर दण्डकेश्वर के मेले में आ रहा है । कलावती सावित्री को सब तौर-तरीके और चालाकियां सिखाती है कि कैसे अधिक-से-अधिक पैसे इस मेले में उसे ठाकुर से ऐंठने हैं । यथा —" जो साड़ी तुझे खरीदनी हो , सिर्फ इतना ही कह देना कि "हाय , कितनी शानदार दिखाई दे रही है । " — चार दिन ये ही होते हैं इन मरदों की बन्द मुट्ठी ढीली कर लेने के , फिर तो ... फिर तो यह मरद नामकी चरड़ी भैंस कहां थनों को हाथ लगाने देती ?"[23] परन्तु सावित्री मां की सारी शिक्षा भूल जाती है , और ठाकुर के बिन मां के बेटे की महतारी बनने का निश्चय कर लेती है । यथा — " और हां , यह तो मैं तुमसे पूछना ही भूल गई । पहली वाली दीदी का मुन्ना आखिर कब तक ननिहाल में पड़ा रहेगा दूसरे के भरोसे ? बेचारा

मां की ममता को तरसता होगा वहां ... मेले से लौटते ही उसको घर वापस ले आना है । " [24]

गोपुली गफूरन :

यह कहानी पहाड़ी परिवेश की तो है , पर साथ ही नगरीय परिवेश की कहानी भी है । अतः उसकी चर्चा नगरीय परिवेश की कहानियों के अन्तर्गत होगी ।

कालिका अवतार :

यह सिलगुड़ी गांव की कथा है । सिलगुड़ी गांव के प्रधान रनबहादुरसिंह का बेटा करनबहादुर स्यांकुरी के जंगल में गाय-बकरियां चराने जाता था । वर्षा ऋतु का समय था । बरसात के कारण पैर फिसला और किसी तालाब में जा गिरा । ऐसे में उसे अस्पताल ले जाना चाहिए था , पर गांव के लोगों ने कहा कि उसे तो "देवपकड़" हो गई है । अतः बैलड़ी गांव के शंकरधामी को बुलाया जाता है । इस कहानी में ग्रामीण परिवेश के लोगों के अन्धविश्वास इत्यादि पर भी प्रकाश डाला गया है । कई बार ओझा-गुनी-डंगरिया लोग अपना अगला-पिछला हिसाब चुकता करने के लिए भी इनके अन्धविश्वास का उपयोग करते हैं । प्रस्तुत कहानी का शंकरधामी किशोर अवस्था की ठकुरानी की इज्जत लूटने का असफल प्रयास करता है । ठकुरानी उसके मुंह पर थूक कर चल देती है और उसे कुत्ता कहती है । तभी शंकरधामी ने कहा था कि " कुत्ता कहा तूने , ससुरी ? मुझ शंकरधामी को कुत्ता कहा ? तो याद रख कभी काटूंगा भी जरूर । " [25] और शंकरधामी को काटने का मौका मिल जाता है । करनबहादुर को चुड़ैल निकालने के बहाने वह उस मासूम पर जो जुल्म ढाता है उससे उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं । ठकुरानी समझ जाती है कि उस कुत्ते ने आखिर काट लिया , पर वह ईंट का जवाब पत्थर से देती है । वह शंकरधामी का खात्मा उसीके तरीके से करती है । वह अपने धर्म के भाई और

जंगरिया उपन्याठीराम को साथ लेती है । करन की मृत्यु के तीसरे दिन ठकुरानी को "पकड़" हो जाती है और फिर उसी शंकरधामी को बुलाया जाता है । ठकुरानी विकराल रूप धारण कर लेती है और शंकरधामी को मार डालती है । यथा —" और ठकुरानी फिर जिह्वा लपलपाती — एक हाथ को खप्पर , एक हाथ में मुण्ड पकड़ने की मुद्रा में उठाए — धूनी के गोल-गोल चक्कर काटने लगी । देवदास उपन्या-ठीराम ने उसको सात परिक्रमाओं पर सात बार दण्डवत् करके जोर-जोर से पुकारा — " सुनो , सुनो , सिलगुड़ी गांव के वासियों ! भाग जगे हैं हमारी सिलगुड़ी के ! ठकुरानी साहिबा में जै मैया जगदम्बा कालिका ने अवतार लिया है । शंकरधामी ने चुड़ैल कहकर मैया कालिका का अपमान किया — जै मैया जगदम्बा , मैंसासुर मरदनी खप्पर-त्रिशूल धारिणी उसके पापों और घमण्ड की सजा दे दिन्हीं ! बोलो , मैया जगदम्बा कालिका की ... " " 26

अंतिम तृष्णा :

प्रस्तुत कहानी में मटियानीजी ने पहाड़ी औरतों के दुःख-दर्द ■■ को मानो समेटकर रख दिया है । रतनसिंह लछिमा को बहुत प्यार करता है । इधर के किसानों का मुख्य व्यवसाय तो पशुपालन का रहता है । जैसे-जैसे भैंसों की संख्या बढ़ती जाती है , उनकी पत्नियां भी बढ़ती जाती हैं । "भैंस के पीछे नौली " कहावत इन लोगों पर खरी उतरती है । "नौली" ■■ नयी-नवेली" बहू को कहते हैं । नौकर रखने से काम कायदे से नहीं चलता , क्योंकि एक तो नौकर मन लगाकर काम नहीं करेगा और दूसरे नक्द तनखा देनी पड़ेगी । अतः नौकर की जगह नौली उन्हें फायदे का सौदा नज़र आता है । पर रतनसिंह लछिमा को बहुत प्यार करता था , अतः लछिमा के न कहने पर भी बार-बार कसमें खाता था कि वह कभी नौली नहीं लायेगा । पर प्रसुति के समय घास-पात काटने से उसे परसूत की बीमारी लग जाती है । रतनसिंह दूसरी नौली ले आता है । लछिमा

खाट पकड़ लेती है ।मानो बीमारी नहीं यह विश्वासघात ही उसे खा जाता है । नयी औरत रेवती समझदार है । वह लछिमा की खूब सेवा करती है । परंतु रतनसिंह के मन में एक अपराध-बोध पनपने लगता है । लछिमा कुछ नहीं बोलती और यही उसे अखरता है । वह चाहता है कि लछिमा उसे कोसे , गालियां दे । पर वह ऐसा कुछ नहीं करती । अतः इस अपराध-बोध के मारे वह खूब शराब पीने लगता है । लछिमा का अंतिम समय आ जाता है । रतनसिंह उसके लिए बरफी लाया है । " अचानक ही कुछ चमत्कार-सा हुआ । प्राण त्याग चुकी प्रतीत होती-सी लछिमा में एक मद्धिम-सा कम्पन हुआ और उसने कांपते हाथ से एक टुकड़ा बर्फी का उठाया । बायें हाथ से रतनसिंह के आंसू पोंछकर और दायें से बफी का टुकड़ा उसके मुंह में भरते हुए , धीमेपन की हद तक धीमी आवाज़ में बोली — " तुम , तुम शराब पीना छोड़ देना , हो । " " 27

वीरखम्भा :

यह पुरखों की शौर्यगाथा , प्रण और टेक की कहानी है । खून-खराबे तो अब भी गावों में होते हैं , पर उसके पीछे गन्दी राज-नीति और कायरता ही कारणभूत होते हैं । प्रस्तुत कहानी में सुपियाली और उँचयाली नामक दो गांवों के बीच चल रहे पुश्तैनी बैर की कथा है । परन्तु उसमें वीरोचित दर्प है । क्षात्रतेज की बात है । और बात है उस नारी की जो शक्ति-स्वरूपा है । जो अपने सतीत्व-धर्म पर सबकुछ कुरबान कर देती है । कहानी यह है कि उंचियाली गांव के थोकदार हनुमंतासिंह ने अपने एक मात्र पुत्र भजंतासिंह के लिए सुपियाली गांव के ठाकुर सबलसिंह की बेटी कमलावती का रिश्ता मांगा था , पर सबलसिंह बचपन में ठने बैर के कारण पुरोहित को अपमानित करके लौटा दिया था । हनुमंतासिंह ने अपने बेटे को ललकारा था और कमलावती को सुपियाली से उठा लाने को कहा था । भजंतासिंह कमलावती को उठा लाया था । सुपियाली का थोकदार बिकरमसिंह

सवा-सौ लठैतों को लेकर कमलावती को वापस ले जाने आया था । तब हनुमंतासिंह सबलसिंह को कहता है कि यदि तेरी बेटी अपनी मरजी से तुम्हारे पास आना चाहे तो हमें कोई आपत्ति नहीं है । सबलसिंह बेटी को खूब समझाता है, पर कमलावती भी सच्ची क्षत्राणी है । वह टस से मस नहीं होती । हनुमंतासिंह की छाती ऐसी बहू को पाकर गज-गज फूल जाती है । वह थोकदार बिकरमसिंह को कहता है कि मैं तलहटी से एक पाथर उठाकर लाता हूं और उसे ऊंचाई दोनों गांव की सड़क के बीच रख देता हूं, यदि तुम इसे पुनः उठाकर तलहटी पहुंचा दो तो मैं कमला को वापस कर दूंगा । बिकरमसिंह शर्त को स्वीकार कर लेता है । हनुमंतासिंह ने नीचे से डेढ़ हाथ चौड़े और पांच फूट ऊंचे पाथर-खम्भ को उठाकर चिकटमोड़ के बीचोबीच रख दिया । बिकरमसिंह उस वीरखम्भे को उठाना तो दूर, हिला भी नहीं सके । तब से वह रास्ता सुपयाली गांव वालों के लिए बन्द हो गया था । हनुमंतासिंह के निधन के उपरांत बहुत वर्षों बाद बिकरमसिंह ने भजंतासिंह को जैसे-तैसे समझाया तब वह रास्ता खुलता है । इसमें कमलावती का चित्रण एक×सच्ची× सच्ची क्षत्राणी के रूप में हुआ है ।

आकाश कितना अनंत है :

इसी शीर्षक से लेखक का एक उपन्यास है । परन्तु उपन्यास जितना आशावादी है, यह कहानी उतनी ही विषाद में डूबी हुई है । जसवंती की सगाई पहले किसी पहाड़ी गांव के लड़के से हुई थी, परन्तु बाद में उसकी शादी दिल्ली के शमशेरसिंह से हो गयी । जसवन्ती का गांव शहर से लगा हुआ था और शहर की सारी कमीनगी वहां फैली हुई थी । कहानी में राधा भाभी का चरित्र एक ऐसा है जो जसवन्ती को पुरुषों के जानवरनुमा व्यवहार से परिचित कराती रहती है । राधा का पति भी एक ऐसा ही वहशी दरिन्दा था । जसवन्ती को बताया गया था कि जिससे उसकी शादी होनेवाली है वह शहर में खूब कमाता है, पर जब वह दिल्ली के कूचा चमेलियान में जाती

है तो यहां के माहौल को देखकर उसका जी घिनाने लगता है । एक दिन तो शमशेरसिंह दो मुस्तंडों को ले आता है । उसके दूसरे दिन जसवन्ती कहती है —" कितना बड़ा धोखा किया तुमने मेरे साथ । दिल्ली शहर की कैसी-कैसी गप्पें हांकी तुमने । साहबों के जैसे सूट-बूट पहनकर , चुरुट ~~xxxx~~ पीते हुए तुम्हारे ठाठ देखकर कौन सोच सकता था कि तुम ठेले साफ करनेवाले क्लीनर हो और शादी के बाद साझे की बीबी बनाने के लिए दो-दो बदमाशों से रकम ऐंठ चुके हो । " [28]इस प्रकार इस कहानी में पहाड़ी परिवेश के साथ-साथ नगरीय परिवेश के नारी-जीवन को भी उकेरा गया है ।

पुरखा :

यह एक गार्हस्थ्य-जीवन की कथा है । कथा के केन्द्र में तो थोकदार हैं । परन्तु उसी ब्याज से पहाड़ी-परिवेश का नारी-जीवन भी आकलित हुआ है । इसमें थोकदार की बहुएं , थोकदारनी तथा हरसिंह की बहू आदि नारी पात्र आए हैं । थोकदार का स्वभाव "हुकुमिया" था । थोकदारनी तो थोकदार के इशारों से समझ जाती थी । थोकदार का कितना रुआब था उसका चित्रण निम्न पंक्तियों में हुआ है ।- " यहां मुंह से आवाज़ निकली , एक फूंक तमाखू ... और कहीं उधर देर हुई कि निकाली चिलम की नली और चार सोंटे जमा दिये — सुसरी । कानों में कीड़े पड़ गए क्या ? " [29] पर थोकदार प्यार भी करते थे । " लाओ स्ठी हों , जरा ठुड्डी ऊपर उठाके कुछ प्रेम से कह दिया , तो अपने कपोलों की लाली कहां छुपाये थोकदारन ? " [30] इसमें थोकदार के छोटे बेटे भीमसिंह की बहू पिरिमा के मुंह से कभी थोकदार के लिए कठोर वचन निकल जाते हैं , तब थोकदार को बहुत बुरा लगता है । पर पिरिमा बाद में बात को संभाल लेती है । हरसिंह की बहू वाले प्रसंग से यह प्रतीति होती है कि पहाड़ों में नारी की स्थिति कितनी दयनीय और असहाय होती है ।

काला कौवा :

यहां पहाड़ी जीवन का एक अन्य आयाम चित्रित हुआ है ।

पहाड़ों में दरिद्रता होती है । अतः तराई भाबर के लोग [देशी लोग] कुछ रुपये देकर उनकी लड़कियाँ से ब्याह कर लेते हैं । जो दुहाजू-तिहाजू होते हैं , उन्हें उनकी जात-बिरादरी में कन्या नहीं मिलती है । ~~xx~~ अतः ये लोग पहाड़ के गरीब और गरजमन्द लोगों को रुपयों की लालच देकर फंसाते हैं । कुंती बिना माँ-बाप की लड़की है । चाचा चतुरी सिंह तथा चाची लछमी के सहारे जैसे-तैसे दिन काट रही है । लछमी चतुरी-सिंह को कहती है — " पहाड़ में ब्याहोगे , तो चार भाड़े गांठ के ही लगाने पड़ेंगे । देसियों को दे दोगे , तो वे आप खर्च लगाकर डोली उठा जायेंगे । सात-आठ सौ की चोखी रकम ऊपर से मिलेगी , सो अलग । घर से खर्च की पोटली खिसकेगी , लछमी मैया आयेगी । "[31] कुंती को अपने "छोरमुल्या" भाई की चिन्ता है । वह उसे अपने साथ तराई में ले जाना चाहती है । उस समय तो तैश में आकर मोहकम-सिंह [कुंती का पति] हामी भर लेता है । परन्तु कुंती की सास परमेसरी रात-दिन ताने-तिसने सुनाती रहती है । अतः कुंती का भाई गोपिया एक दिन भाग जाता है ।

नेताजी की चुटिया :

यद्यपि यह एक हास्य-व्यंग्य की कहानी है और आलोच्य विषय की दृष्टि से कोई विशेष नारी-पात्र में इसमें नहीं है , तथापि इसमें एक ऐसे नारी-पात्र की चर्चा है जो आजादी के बाद की हमारी राजनीति की पैदाइश है । शारदाजी आदर्श महिला विद्यालय की प्रिंसिपल हैं और हड़ताल-सरघस आदि कार्यों में जोश-खरोश से हिस्सा लेती हैं । कहानी के नायक नेताजी अपनी चुटिया को लेकर बखेड़ा खड़ा करते हैं और उसे सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास करते हैं , तब उस सरघस में "ठाकुर साहब , हम लोगों को सब पता चल चुका है "[32] कहती हुई शारदाबेहन भी पहुंच जाती हैं । आचार्या होने के नाते इनका पढ़ने-पढ़ाने-पढ़वाने में रस ~~xx~~ होना चाहिए , परन्तु इनको छोड़कर शहर की तमाम गतिविधियों में इनका रस है ।

झुरमुट :

यही कहानी अन्यत्र कठफोड़वा शीर्षक से भी प्रकाशित हुई है । प्रस्तुत कहानी में पहाड़ों में ईसाई हो जाने वाले ब्राह्मण-पंडित के संस्कारों का ऊहापोह अभिव्यंजित हुआ है । धरणीधर उप्रेती सुप्रिया मसी के मोहाकर्षण एवं रूपाकर्षण के कारण तारा पंडितानी को छोड़कर डी.डी. मसी तो हो जाते हैं, परन्तु उस मोह के समाप्त हो जाने पर उनके ब्राह्मण-संस्कार उछाल मारते हैं और उनके आत्मा का कठफोड़वा कुट-कुट करने लगता है । उन्हें ऐसा अनुभव होने लगता है कि मानो वह सुप्रिया मसी के "गोल्डन पैरेट " मात्र बन गये हैं और सुप्रिया का घर एक पिंजरा । सुप्रिया ठीक ही कहती है -- " कभी तुमने इसी बात पर अपनी "वाइफ" को छोड़ दिया था कि वह निहायत बैक्वर्ड और दकियानुसी औरत है । तुम्हें "डीपली लव " नहीं करती । तुम्हें आमलेट बनाकर नहीं देती, तुम्हारे साथ घूमने-फिरने नहीं जाती है और अपने हिन्दू धर्म को तुम "हेट" करते कि तुम्हारे बिरादरी वाले ब्राह्मण बहुत ही ज्यादा दकियानूस और "मीन मैंटालिटी " वाले हैं ... मगर मुझे लगता है, वह सब तुम्हारा दिखावा ही था । एइम तो तुम्हारा जैसे-तैसे "कनविंस" करके, मुझसे अपनी "लस्ट" को पूरा करना था । " [33] इस प्रकार धरणीधर उप्रेती एक साथ दो स्त्रियों की ज़िन्दगी में विष घोल देते हैं । उनका अपना जीवन तो त्रिशंकु-सा हो ही जाता है, तारा और सुप्रिया के जीवन को भी वे त्रिशंकु जैसा बना देते हैं । दूसरे सुप्रिया के रूप में लेखक ने एक ऐसे नारी पात्र को रखा है जो अपने शिक्षक से विवाह कर लेती है । उप्रेती की यह कहानी "चन्द औरतों का शहर " नामक उपन्यास में भी समानान्तर कहानी या प्रासंगिक कहानी के रूप में आयी है ।

एक शब्दहीन नदी :

अन्यत्र यह कहानी "सुखा-सागर" के रूप में आयी है । इसमें

हंसा नामक एक पहाड़ी युवती को लिया गया है । इस हंसा का विवाह शंकरसिंह सु से हुआ है । विवाह के तीसरे महीने से ही शंकरसिंह बाहर निकल जाता है क्योंकि पहाड़ की खेती से दो छोटे भाई और विधवा माँ तथा हंसा का पालन-पोषण नहीं हो सकता । दूसरे वह हंसा को नये-नये फैशन के कपड़े देना चाहता है । इन सब इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह शहर चला जाता है । दिल्ली में वह चौकीदारी कर लेता है । चौकीदारी करते-करते वह हंसा को प्रेमपत्र लिखता है जिसमें वह उसे सुनहरे स्वप्न दिखाता है । छुट्टी लेकर गांव जाता है । गलत-सलत खर्च करता है, परन्तु हंसा को दिल्ली ले जाने की स्थिति उसकी नहीं है, अतः जब छुट्टी पूरी होने पर आती है हंसा को उसके पिहर भेज देता है और फिर पीछे से चला जाता है । लेखक की टिप्पणी है — " अपनी औकात से बाहर सपनों के व्यामोह में खुद शंकरसिंह ही उसे छोड़ आया और आज उसे हाथ बढ़ाकर छूना सपना हो गया । " [34]

खरबूजा :

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है ऐसी कहावत है । प्रस्तुत कहानी का खिमानंद अपनी पत्नी कमला को बहुत ही चाहता था । कमला के रूप-गुण और शील-स्वभाव की चारों तरफ चर्चा थी । खिमानंद को लोग "तिरियादास मरद " कहते थे । कमला की सगाई पहले पुलाड़ीगांव के उर्बादत्त से हुई थी । उर्बादत्त पलटन में था । सन् अड़तालीस में वह कश्मिर फ्रन्ट पर गया और कई महीनों तक जब उसकी चिट्ठी नहीं आयी तो कमला के पिता पंडित रुद्रमणि ने कमला का विवाह खिमानंद से कर दिया कि कहीं उनकी बेटी को "खसम टोकुवा" का कलंक न लग जाय । परन्तु पलटन से डिस्चार्ज होने पर उर्बादत्त घर आया और उसने जब कह दिया कि आंखों की पुतली-सी कमला ही चली गई तो अब वह किसी और से शादी नहीं करेगा, तो यह खबर पत्थरखापी खिमानन्द के पास भी पहुंची । तबसे खिमानंद

के मन में दरार पड़ जाती है । इस पर सदानंद और नंदी पंडितानी वाली घटना हो जाती है । नंदी "दोघरिया" औरत है । सदानंद की ब्याहता मर गयी तो वह नंदी को ले आया था । नंदी अपने पहले पति को छोड़कर मायके में बैठी थी । सदानंद उसे ले आता है । नंदी की सास चन्द्रैपी काकी×से नंदी से जलती थी , अतः वह ऐसी बात प्रचारित करती है कि पतुर्भोज के हिरिया मोहार के साथ नंदी का हेल-मेल है । नंदी के तीन बच्चे थे । पर सदानंद उसे घर से निकाल देता है । शिमानंद उसे समझाने जाता है , तब सदानंद उसे उर्वादत्त वाली बात सुना देता है । फलतः शिमानंद भी कमला को निकाल देता है । नंदी सधुआइन हो जाती है । पर कुछ वर्ष बाद वापस आती है । चंदरैपी चाची का देहान्त हो गया था और सदानंद भी कुछ ढीला पड़ता है , तब नंदी पुनः आ जाती है । इधर शिमानंद भी मां के अति आग्रह के कारण कमला को ले आता है । वह फिर कमला को पहले भी अधिक प्रेम करने लगता है , तब एक दिन कमला उसे हसेके× टोकते हुए कहती है — " हं हो , इतना मोह भी ठीक नहीं होता । एक बेटे के बाप बन गए हो । अब तो यों छाया की तरह पीठ-पीछे चलना छोड़ दो । " 35

बित्ता भर सुख :

"बित्ता भर सुख" की सुमित्रा एक "मिडवाइफ" है । लैंसडाउन जैसे छोटे-से शहर में "मिडवाइफ" को भी डाक्टरनी कहा जाता है । सुमित्रा को आसपास के गांवों में "डलीवरी" कराने जाना पड़ता है । उस समय अस्पताल का चपरासी किसना उसके साथ होता है । सुमित्रा बचपन में बहुत भावुक थी । शादी हुए कुछ ही महीने हुए थे कि पड़ोस में ही गलत कदम रख बैठी । उसके पति ने देख लिया और उसे निकाल दिया । तबसे मिडवाइफ का काम कर रही है । खुले स्वभाव के कारण सुमित्रा के बारे में लोग

तरह-तरह से सोचते हैं । किसना भी उसे लेकर भावुक है और अपने बटुवे में सुमित्रा की तस्वीर को छिपाकर रखता है । एक दिन जान-बूझकर वह बटुवा सुमित्रा के कमरे में छोड़ आता है । कदाचित् अपने भाव वह सुमित्रा पर जाहिर करना चाहता था । सुमित्रा उसके बटुवे में अपना फोटो देख लेती है , तब उसे कहती है — " मैंने बहुत सोचा है , किसना ! मैं फिर कहती हूं ओहदे में तेरा छोटा होना मेरे लिए कोई मानी नहीं रखता , मगर अपने स्वभाव को मैं जानती हूं । लम्बा साथ निभ नहीं पाएगा । छोटा निभना और ज्यादा खोखला हो जाना होता है । ... यों , तेरे-मेरे बीच में फासला ही कितना है , ... कहते हुए , सुमित्रा फिर मुस्कराई और अपने दायें हाथ का बित्ता उसके और अपने बीच में फैला दिया । " [36] सुमित्रा के अतिरिक्त इस कहानी में शर्मा डाक्टरनी तथा गांव की औरतों के भी कुछ चित्र अंकित हैं ।

जिबुका :

वैसे तो इस कहानी के केन्द्र में जिबुका (जीवनसिंग मटेला) है , परन्तु इसमें पारबती भौजी और मधुली जैसे नारी पात्र आए हैं । देवर-भाभी का निर्दोष प्रेम भी इसमें चित्रित हुआ है । मधुली जिबुका की घरवाली है और इस नाते पारबती की देवरानी हुई । मधुली अपनी जिठानी को बहुत मान-सम्मान देती है ।

संस्कार :

प्रस्तुत कहानी में कई नारी पात्र हैं ।जसौंतसिंह पधान की महतारी लगभग नब्बे साल की बुढ़िया है । पधान जसौंतसिंह की ब्याहता औरत तो रेवती है । परन्तु रेवती को कोई सन्तान नहीं होती , अतः जसौंतसिंह बांसुली को नौली के रूप में ले आते हैं । रेवती-बांसुली में सौतिया-डाह नहीं है , बल्कि दो सहेलियों की तरह वे रहती हैं । बांसुली के आये बाद रेवती को दो पुत्र होते हैं — रामसिंह और

डीमसिंह । बांसुली विधवा थी । वह अपने साथ परताप को लेकर आयी थी । जसौंतसिंह प्रताप को सर्वाधिक चाहते हैं । उसका रहस्य बाद में खुलता है कि प्रताप में जसौंतसिंह का ही खून था -- " प-र-ता-प- मेरा सच्चाxबेटाx बेटा तू ही है लला । इस सत्त को धरती-धरमराज दोनों जानते हैं । तू गर्भ में था , तभी मैं तेरी महतारी को लाने को मजबूर हो गया । बड़ी लछमी नार थी -- अब तो बेटे , चलाचली का समय आ गया -- एक मजमून तैयार कर । मेरी सारी जमीन-जायदाद मेरी सारी लटी-पटी में मौरूसी हक सिर्फ तेरा ही बदस्तूर रहेगा । " 37
इस कहानी में यह चित्रित किया गया है कि जसौंतसिंह की ब्याहता औरत रेवती के बेटे रामसिंह , डीमसिंह , जसौंतसिंह की बुढ़िया मां , रामसिंह-डीमसिंह की घरवालियां इन सबको मृत्यु-शैया पर लेटे जसौंतसिंह की चिन्ता नहीं हैं , चिन्ता है जमीन-जायदादा की । दूसरी ओर नौमी के बेटे प्रतापसिंह की बहू उनकी जी-जान से सेवा करती है । प्रतापसिंह पलटन में है । ये लोग उसे बुलाना नहीं चाहते । पर जसौंतसिंह के प्राण प्रताप में अटके थे । आखिरकार प्रताप की बहू की प्रार्थना पर वैद्यजी तार देते हैं और प्रताप आता है । जसौंतसिंह अपनी जायदाद प्रताप के नाम पर करना चाहते थे , पर प्रताप उसमें कोई दिलचस्पी नहीं बताता । उसकी पत्नी भगवती भी लालची नहीं है । इस कहानी में यह चित्रित हुआ है कि जमीन-जायदाद के लिए परिवारों में कैसे-कैसे खेल होते हैं । इसमें लेखक ने नारी का महतारी रूप भी चित्रित किया है और कुटिल रूप भी ।

कविxxxx भस्मासुर :

यद्यपि यह कहानी पुरुष-केन्द्रित कहानी है , इसमें पद्मा भौजी का चरित्र उपलब्ध होता है । गजानन्द और ब्रह्मानन्द दो भाई हैं । ब्रह्मानंद बचपन में हुए रोग के कारण सूखा और कमजोर था । गजानंद इस बात का फायदा उठाता है । वह चारों तरफ यह प्रचार करता घूमता है कि ब्रह्मानंद तो पुरुषों में है ही नहीं ।

गजानंद सोचता है कि यदि ब्रह्मानंद शादी नहीं करता है तो सारी जमीन जायदाद एक मात्र उसकी हो जायेगी । अतः जान-बूझकर वह उसके सामने ऐसी बातें और हरकतें करता है जिससे ब्रह्मानंद की मधुता-ग्रंथि और बढ़ती जाय । पर एक समय आता है कि चंदन भी आग उगलने लगता है । एक बार पद्मा भौजी ब्रह्मानंद को कहती है — " कुछ नहीं, लला, तुम भी सारी जिन्दगी खेत में खड़े कठपुतले की तरह काट दोगे अरे राम, खेत के कठपुतले की भी इतनी डर होती है कि कौवे मक्कई उजाड़ते डरते । पास-पड़ोस की औरतों के भी देवर हैं, बातें करते हैं तो नारंगी जैसी निचोड़ते हैं । "[38] कई दिनों का बांध टूट जाता है और ब्रह्मानंद तीखी आवाज़ में चिल्ला उठता है — " मुझे तो मुर्दा तुम्हारे ही भरतार ने बना रखा है भौजी । सारे गांव-इलाके में मुझे नामरद बताता फिरता यह पहलवान, मगर चार बरस हो गये तुम्हें लाये हुए । मक्कई के खेत में घुघुती ने अण्डे दे दिए हैं, लेकिन तुम्हारा घोंसला उजाड़ । असल कठपुतला तो यही मर्द मराठा । मेरी शादी हो गई होती, तो बच्चे भी हो गए होते । "[39] इतनी-सी बात का गजानंद बतंगड़ बनाते हुए ब्रह्मानंद पर झूठा आरोप लगाता है कि उसने उसकी भौजी की इज्जत लुटनी चाही । ब्रह्मानंद का पौरुष जाग उठता है और वह कुल्हाड़ी लेकर गजानंद को मारने उसके पीछे दौड़ता है । वह किसी तरह जान बचाकर भागता है । ब्रह्मानंद बाद में आत्महत्या कर लेता है ।

<u>रुका हुआ रास्ता :</u>

इस कहानी में पहाड़ी नारी की पीड़ा के एक नये आयाम को लेखक ने रखा है । गोमती का प्रथम पति पलटन में फौत हो गया । साल भर बाद वह खीमसिंह की नौली हो गई । खीमसिंह और गोमती में बहुत प्यार था । किसीकी नजर लग गई । खीमसिंह को "लक्वाबाई" मार गई । वह चलने-फिरने से अपाहिज हो गया । गोमती खीमसिंह

की तन-मन से सेवा करती है , पर भीमसिंह का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और वह बात-बात में उसे नटोरता और लताड़ता रहता है । इस स्थिति का लाभ लेते हुए किसनसिंह गोमती को अपने घरबार आने के लिए बार-बार समझाता है । किसनसिंह की पत्नी गांगुली गुलबिया सिपाही के साथ भाग गई थी । एक बार तो गोमती तैयार भी हो जाती है और पिछवाड़े से किसनसिंह के घर चली जाती है , परन्तु भीमसिंह की लाचारदर्जी का विचार आते ही उसकी अंतरात्मा जाग उठती है और वह पुनः अपने घर चल देती है ।

चुनाव :

यह पंडित कृष्णानंद और कमला शिल्पकारनी की कथा है । कृष्णानंद और कमला में प्रेम था , पर जाति की दीवार बीच में आती है । अतः कमला को लेकर कृष्णानंद शहर भाग जाता है । वहाँ पादरी जानसन चौहान से उसकी मुलाकात होती है और कमला के प्रेम के कारण बचपन में ईसाइयों को धिक्कारने वाला कृष्णानंद ईसाई हो जाता है । कमला को अब कैथरीन या मिसेज क्रिस्टी करके जाना जाता है । वह अब बैडमिंटन खेलने लगी है । पादरी साहब के भतीजे विलसन चौहान के साथ वह खेलती और घूमती रहती है । कृष्णानंद महज नौकर बनकर रह गया है । पादरी उसे धर्म-वचन सुनाते हैं — " प्रभु उन सभी लोगों पर प्रसन्न रहते हैं जो ईर्ष्या-द्वेष से मुक्त और सहनशील हैं । जो अपने जीवन के तमाम सत्यों को सहज भाव से स्वीकारते हैं और उन्हें प्रभु की शरण में समर्पित करके , खुद मुक्त हो जाते हैं । .... धर्म इस बात की पूरी-पूरी आजादी देता है कि औरत अपने लिए अनुपयुक्त प्रेमी या पति को तलाक देकर , उपयुक्त और सही प्रेमी या पति का चुनाव कर ले । "[40] परोक्ष रूप से पादरी यह कहना चाहता है कि वह कैथरीन और विलसन के रास्ते से हट जाय । और कृष्णानंद चुनाव करता है — मौत का , आत्महत्या करके । कृष्णानंद सोचता है — " फादर , हकीकत में तुमने ही मुझे अपने लिए चुना था । सिर्फ मुझे ही नहीं , कमला को भी तुमने अपने

भतीजे के लिए चुना था । तुमने यह सरासर झूठ कहा कि प्रभु उन तमाम लोगों पर प्रसन्न रहता है , जो सही लोगों का चुनाव करता है । " [41]

पाप मुक्ति :

प्रस्तुत कहानी में भी हमें नारी के दो रूप मिलते हैं । नंदी का विवाह किसनिया से हुआ है । वह एक बच्ची की मां बन चुकी है । अभी गर्भवती है । देवरानी-जिठानी-ननद या सास कोई नहीं है । दूर की एक चचिया सास है — परतिमा सासू । अतः मदद के लिए अपनी बहन ललिता को बुलाती है । xxxx×xxx× परन्तु ललिता और किसनिया में प्रेम-सम्बन्ध होने लगता है । किसनिया बहाना बनाता है कि ललिता को मसान लग गया है । अतः उसकी "रखवाली" करनी होगी । किसनिया भी रखवाली में सिद्ध माना गया है । "रखवाली " के बहाने वह ललिता के पास होता है । एक दिन नंदी दोनों को साथ-साथ सोये हुए देखलेती है । नंदी सारा मामला भांप लेती है । अतः दूसरे दिन किसनिया जब "होर्त होर्त " चीखते हुए ललिता को भभूत लगाने जाता है , तब नंदी कहती है — " हे हो , बेकार में भभूत क्यों चुपड़ते हो बेचारी ललिता के कपाल में अब ? कितना गोरा कपाल है इसका ? आँखें कितनी सुंदर है इसकी । और सुनो , तुम अब अपनी यह दिखावटी रखवाली छोड़ दो । इसका मसान तो राख का नहीं बल्कि सिन्दूर का टीका कपाल में लगाने से उतरेगा ।" [42]

माटी :

यह एक दुखियारी औरत की कथा है । माटी कद-काठी और रूप-गुण की तो अच्छी है । पर छोटी जाति की है , ऊपर से गूंगी । उसके इस गूंगेपन का लाभ उठाते हुए बनारसी बुकसेलर ने उस पर बलात्कार किया था । शायद उसी का गर्भ हो रही थी । उसका एक मात्र सहारा डिगरराम था — काना , कलूटा और पलीत । जब

वह मर जाता है , तब माटी इतना विलाप करती है कि लोग चकित रह जाते हैं । ढाई ××× मील तक वह डिगरराम की अर्थी के साथ जाती है और बड़ी मुश्किल से उसे अलग किया जाता है ।

पुरोहित :

राधे पुरोहित एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण है । मृत्यु-बेला समीप है । मां से लेकर प्रेमिकाओं , पत्नियों और पुत्रियों की नारी आकृतियां उनके मनो-मस्तिष्क में कौंधने लगती हैं । उनकी उम्र तिहत्तर वर्ष की हो गई है । तीन बेटियों का कन्यादान कर चुके । चौथी बेटी अरुंधती ही रह गई है । परन्तु उसका कन्यादान करने की सामर्थ्य अब राधे पंडित में नहीं है । चार बेटे हैं । पहली पत्नी के । सभी अपनी बहुओं के साथ अलग रहते हैं । अरुंधती दूसरी पत्नी की बेटी है । पत्नियों की मृत्यु हो गई । बेटे अलग चले गये । राधे पुरोहित के अहंकार को झेलना उनके लिए मुश्किल था । अब घर में केवल अरुंधती रह गई है । पिता की मृत्यु-बेला में वह सहम गई है । राधे पुरोहित अंतिम समय में अपनी बेटी से कहता है — " तू मेरी कन्या है ना .... तू अपनी संरक्षिका स्वयं बन जाना । भिक्षा मांग-मांग कर उदर-पोषण कर लेना , निषिद्ध कर्मों से भी जीवित रह जाना , मगर उस अहंकारी की शरण मत खोजना । ... सवाल तेरा नहीं है बेटी । तेरे रूप में वह अहमन्यराधे पुरोहित को ही अपनी शरण में याचक के रूप में खड़ा पाएगा । मुझे मेरे ×× इस अहंकार से मुक्ति कैसे मिलेगी .... सिर्फ तुझे प्रचंड अहंकारिणी बनाकर , अपने संस्कारों का तुझमें विसर्जन करके ही मैं मुक्त हो सकता हूं .... जरा अपनी नाक की फुल्ली से छुआकर , मेरे मुंह में गंगाजल डाल दे । "[43] तब अरुंधती चिल्ला उठती है — " बाबू , तुम पागल हो गए हो ... बाबू पागल हो गए हो .... "[44]

प्रेत-मुक्ति :

मटियानीजी की यह एक बहुचर्चित कहानी है । राजेन्द्र यादव

द्वारा संपादित कहानी-संग्रह " एक दुनिया समानान्तर " में भी यह कहानी संग्रहीत है । इसमें मुख्यतया चार नारी पात्र मिलते हैं । भैरव पांडे की पत्नी और केवल पांडे की मां बौराणी कुसुमावती , केवल पांडे की पत्नी बौराणी चन्द्रावती , किसनराम की सौतेली मां और किसनराम की पत्नी भवानी । कुसुमावती और चन्द्रावती का चित्रण उदार , ममता और करुणा-मूर्ति के रूप में हुआ है । किसनराम की सौतेली मां का चित्रण एक अत्याचारिणी औरत के रूप में हुआ है । किसनराम के पिता उससे बहुत संत्रस्त रहे , अतः प्रेत बनकर उसे लगे हैं ऐसा कहा जाता रहा है । किसनराम एक सीधा-सादा , भोला , प्रामाणिक और ईमानदार हलिया है । उसकी कई पुश्तें पांडे परिवार की सेवा में गई थीं । किसनराम अपनी पत्नी भवानी को बहुत चाहता था , परन्तु वह हरजायी निकली और दूसरे के साथ भाग गई । किसनराम दूसरी स्त्री ला सकता था , पर भवानी को बेइन्तिहा चाहता था । अतः दूसरी शादी नहीं करता । किसनराम को अपनी सद्गति की चिन्ता इसलिए है कि मृत्यु के उपरांत कहीं वह प्रेत-योनि में गया तो कहीं वह उसकी भवानी को परेशान न करे , क्योंकि इधर वृद्धावस्था में उसकी आत्मा कई बार भवानी के लिए कलपती थी ।

सुहागिनी :

मटियानीजी की यह कहानी नारी-जीवन की एक अन्य त्रासदी को प्रस्तुत करती है । पहाड़ी परिवेश के ब्राह्मणों में कई बार दान-दहेज के अभाव में कन्या का विवाह नहीं हो सकता है । प्रस्तुत कहानी की पद्मावती एक ऐसी ही अभागिन कन्या है । पिता काल कवलित हो गए हैं । बहुत कोशिश करने पर भी भाई बुद्धिवल्लभ पद्मावती के लिए कोई वर नहीं जुटा पाते हैं । ऐसी स्थिति में पहाड़ों में "घट-विवाह" की प्रथा प्रचलित है । कन्या का विवाह तांबे के घट के साथ कर दिया जाता है । कई बार ऐसा भी होता है

कि भाई-भाभी रुपये-पैसों के मोह में बहन का विवाह नहीं करते । परन्तु यहां ऐसा नहीं है । भाई बुद्धिवल्लभ तथा भौजी लीलावती दोनों पद्मावती को बहुत प्यार करते हैं और उसके लिए दुःखी रहते हैं । पद्मावती शादी-ब्याह के शकुन बहुत मधुर आवाज़ में गाती है । उस संदर्भ में लीलावती बोज्यू एक बार कहती हैं — "लली , बहुत शकुन गाती हो तुम । ... और इतनी मधुर-मीठी आवाज में कि लगता है , तुम सिर्फ़ शकुन गाने के लिए ही जन्मी हो , सुनने को नहीं । " [45] पद्मावती का घट-विवाह हो जाता है और वह तांबे के उस कलशे को ही अपना पति मानने-[redacted] समझने लगती है । एक बार कलश ऊपर से गिर जाता है , तब पद्मावती बहुत विलाप करती है । उसके विलाप को सुनकर गंगासिंह हेडमास्टर की नयी घरवाली जब यह कहती है कि कलश फूट गया है तो क्या नया कलश बाजार में नहीं मिलता क्या ? तब पद्मावती उस पर फूट पड़ती है — " चुप रह , ओ खसिणी ! मैं कोई तुम जैसी सिधरिया पातर नहीं ! नया कलश नहीं मिल सकता है कहती रांड़ ! अरी , तू ही ढूंढती रह , तुझे ही मुबारक नये-नये खसम ! मैं तुम-जैसी कमनियत खसिणी नहीं — पतिव्रता ब्राह्मणी हूं । ... मुझे तो यह कुम्भ भी पति-समान ही ठहरा और सदा पति-[redacted] समान ही रहेगा ! " [46] कलश जो पिचक गया था उसे ठीक करने टमटे के पास भेजा जाता है । पद्मावती इस कल्पना से ही सिहर रही थी कि टमटा कलश को भट्ठी पर चढ़ायेगा और हथौड़ों से पीटेगा । इस बीच में भाई बुद्धिवल्लभ का निधन हो गया था । अतः लीलावती कलश के संदर्भ में बात करती है तब पद्मावती के मुंह से सहसा निकल पड़ता है — " अरे , बोज्यू , तुम क्यों नहीं कहोगी ऐसा ! तुम तो अब विधवा हो , विधवा ! तुम क्या समझोगी कि सुहागिनी के मन की व्यथा क्या होती ! " [47] और ऐसा कहते हुए पद्मावती बच्चियों की तरह बिलखने लगती है ।

<u>असमर्थ :</u> प्रस्तुत कहानी बहादुरसिंह और पार्वती की कथा-व्यथा

~~हो रहते हैं । इसमें प्रारूप कम उनकी अपनी मजबूरी और ज्यादा है ।~~ को प्रस्तुत करती है । सौतेले भाइयों के आतंक और मार के कारण बहादुरसिंह के एक हाथ को लक्वा मार गया था । सौतेले भाई उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे । अतः उसके जीवन में जब पार्वती आती है तब उसे लगता है कि वह शायद सौतेले भाइयों के आतंक से त्रस्त उसकी आत्मा को कुछ सहारा दे सकेगी । बहादुरसिंह के लिए पार्वती पत्नी भी थी और ममतामयी मां भी । पार्वती बहादुरसिंह को अलग हो जाने के लिए बार-बार कहती है, परन्तु बहादुरसिंह भाइयों के डर के मारे यह कह नहीं सकता । पार्वती एक तेज-तर्रार और स्वाभिमानी स्त्री है । वह बहादुरसिंह के सेवा तो कर सकती है, परन्तु इसके भाइयों के हुकुम में चलना, उनका अपमान और अत्याचार सहना, उनकी पत्नियों के ताने-तिसने सुनना यह उसे गवारा नहीं है । अतः वह शिवचरन के साथ चली जायेगी ऐसा कई बार बहादुर को कह चुकी थी, परन्तु बहादुर उसकी बात को अधिक गंभीरता से नहीं लेता है और एक दिन वह सचमुच शिवचरन के साथ भाग जाती है । उस समय वह बालिग थी, अतः अदालत भी पार्वती की बात को ही मानती है । बहादुरसिंह शिवचरन के पैरों में पड़ जाता है, तब पार्वती कहती है कि " अगर तुम जायदाद का बंटवारा करवाकर सौतेले भाइयों से न्यारा होने को तैयार हो तो मैं चलती हूं तुम्हारे साथ । बोलो ? "[48] और अन्ततः वह पुनः बहादुर के साथ जाने के लिए तैयार हो जाती है, हालांकि अपने मुंह से "हां" कहने में बहादुर असमर्थ था ।

घुघुतिया त्यौहार :

प्रस्तुत कहानी वैसे तो दलित चेतना की कहानी है, परंतु जहां तक नारी-चरित्रों का प्रश्न है इसमें जसुली, थोकदारीन और लक्ष्मी ठकुरानी के ~~xxxxx~~ के चरित्रों की बात आती है । जसुली देवराम की घरवाली और चेतराम की महतारी है । थोकदारिन

बिमलकोट के थोकदार ठाकुर कल्याणसिंह की धर्मपत्नी है । कल्याणसिंह लक्ष्मी ठकुरानी के ककिया ससुर हैं और उन्होंने अपनी थोकदारी की ताकत पर ठकुरानी के कुछ खेतों पर कब्जा कर लिया है । उसको लेकर पंचायत बैठनेवाली है और देवराम भी उन पांच पंचों में से एक है । कल्याणसिंह सोचते हैं कि देवराम उनका हलिया है , अतः डरा-धमका कर या लालच देकर उसे अपने पक्ष में कर लेंगे , परन्तु देवराम भी आज "घुघुतिया त्योहार" का कौवा बना हुआ है । वैसे तो कौवों की बड़ी बेकद्री होती है , परन्तु पहाड़ों में ये एक त्योहार आता है — "घुघु-तिया त्योहार" , उस दिन कौवों को पूड़ी और खीर खिलाई जाती है । गुजरात में श्राद्ध-पक्ष में ऐसा होता है । कहानी से जो संकेत मिलता है , उससे तो यही ज्ञात होता है कि देवराम कल्याणसिंह का पक्ष न लेकर न्याय का , अर्थात् लक्ष्मी ठकुरानी का पक्ष लेगा ।

इतिहास :

वैसे इस कहानी के उप्रेती साहब तो बड़े-बड़े शहरों में रहे हैं , परन्तु मूलतः पहाड़ों के होने के कारण , अपने "पितर-थान" का मोह उन्हें कभी-कभार खींच लाता है । प्रस्तुत कहानी में पहाड़ी नारी-चरित्र ■■ स्मृति के माध्यम से आए हैं । उप्रेती साहब की धर्मपत्नी मर्xxxxxमxx माँडवी है , जिसे वे प्रायः पुष्पेन्द्र की इजा कहते हैं । गुड्डन उप्रेती साहब की पोती है । लड़की या पुत्री को पहाड़ों में "पोथी" कहते हैं । एक बुढ़िया "पुंगुलि आमा " का भी कुछ जिक्र आया है । "उत्तरापथ" भी इसी प्रकार की कहानी है ।

अर्द्धांगिनी :

यह एक गार्हस्थ्य-रस की कथा है । नैनसिंह सूबेदार पलटन में हैं । केवल छुट्टियों में ही रुक्मा सूबेदारनी से मिलना

होता है । सूबेदार रुक्मा को बहुत चाहते हैं । वे सोचते हैं कि "औरत है कि देवी है — माया-मोह और भय-भक्ति का ही सहारा है ।"[49] मन ही मन वे अपनी कुलदेवी मैया का ध्यान करते हैं कि " जब तक मैया का ऐसा ध्यान है, तब तक रक्षा जरूर है ।"[50] इस कहानी में गार्हस्थ्य सुख और प्रेम के साथ-साथ फौजी-पत्नियों के मनो-मस्तिष्क पर भय का साया जो मंडराता रहता है उसको भी संकेतित किया गया है । " रात के सन्नाटे में, नीचे घाटी की दिशा से, सियारों का समवेत आता है । और याद आता है, सूबेदारनी का आंचल ओठों में दबाकर, यह बताना कि इसी वर्ष जुलाई में गांव के तीन घरों में तार आये । सुना, उधर अमृतसर में कोई लड़ाई हो गयी ... एक साया फौजियों के घर मंडराता फिरता रहा है महीने भर । ... किसी भी दिन हो सकता है, अघटित का घटित होना । फौजी गुजरता है, तो सिर्फ तार ही देखने को मिलता है । रूप, आकार — उसीमें सबकुछ देख लो ।"[51]

(ब) नगरीय परिवेश की कहानियाँ

यह पहले ही निर्दिष्ट किया जा चुका है कि यहां केवल उन कहानियों पर विचार हुआ है, जिनमें नारी-चरित्र केन्द्रस्थ हैं । नगरीय परिवेश की ऐसी कहानियों में भी मटियानीजी के यहां दो कोटियाँ मिलती हैं — अल्मोड़ा-नैनिताल जैसे पहाड़ी नगरों के परिवेश की कहानियाँ और (ख) बम्बई (अब मुंबई) जैसे नगरों के परिवेश की कहानियां ।

(क) पहाड़ी नगरीय परिवेश की कहानियां

छाक :

यह कहानी है किशन मास्टर, गीता मास्टरनी और उषा की । किशन मास्टर वैसे तो लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं

परन्तु गीता मास्टरनी पहाड़ी शहर की एडम्स हाईस्कूल में पढ़ा रही हैं। किशनचन्द्र उप्रेती और गीता कालेज में साथ थे, किशन बी.ए. फाइनल तथा गीता इण्टर प्रथम वर्ष में। मिरतोला और जागेश्वर साथ-साथ घूमे थे। दोनों एक-दूसरे को खूब चाहते थे। पर विवाह नहीं हो सका। किशन का विवाह उमा से हो गया। "सवाल सिर्फ मां की अन्तिम इच्छा का ही नहीं उपस्थित हुआ, बल्कि बात सामने आई उमा के पिठों लगी वाग्दत्ता होने की भी और यहां आकर खुद किशन भी निरुत्तर हो गए।" [52] गीता की बड़ी बहन एक ईसाई ब्राह्मण परिवार में चली गई थी और गीता ने विवाह नहीं किया था। इस बात का पता किशन को बहुत बाद में चलता है। बीच में एक-दो बार वे गीता को मिलते हैं। उमा की बीमारी में वह जी-जान से सेवा करती है और उसे मौत के मुंह से बचा ले आती है। उसी गीता की मृत्यु हुई है देहरादून में। दुःख उमा को भी होता है पर किशन मास्टर उसे कैसे कहें कि वह गीता के लिए छाक छोड़ना चाहते हैं। किसीकी मृत्यु पर एक वक्त के खाने को छोड़ना "छाक" कहलाता है। दूध, खून या बिरादरी का रिश्ता हो तो "छाक" छोड़ा जाता है। गीता का तो धर्म भी दूसरा है। सम्बन्ध केवल आत्मा का है। परन्तु किशन मास्टर को इस द्वन्द्व से उबारती है उमा। "उन बेचारी ने तब जाने कितनी रातें मेरे लिए जागते काटीं। मैं क्या उनके लिए एक वक्त छाक भी नहीं छोड़ सकती थी? चलो, चलें अब भीतर। मैं जानती हूं, तुमने भी कहीं कुछ नहीं खाया-पिया होगा।" [53] इस प्रकार यहां दोनों नारी-चरित्र अपनी उदात्तता में ऊपर उठे हुए हैं।

हलाल :

यह एक मुस्लिम परिवेश की कहानी है। खयालीराम एक अनाथ बच्चा है। मां-बाप बचपन में ही काल-कवलित हो गये थे। जानकी ताई ने पाला-पोसा था। बाद में उनकी भी मृत्यु हो गई। खयाली-

राम खत्तनमियाँ हो गये । सलामतहुसैन बूचड़ ने उन्हें अपने पास रख लिए । ख़त्तनमियाँ नामके ही ख़त्तनमियाँ थे । उनकी सुन्नत नहीं हुई थी । बावन साल की उम्र में तपेदिक की घुन लगी हुई सलमा बीबी को रख लिया तो भास्कर पंडित ने कहा था — " हालांकि तुमने यह नियामत उम्र ढलते में पायी है । मगर फिर भी ~~अल्लाह~~ तुम्हें औलाद जरूर मिलेगी । "54 मगर खत्तनमियाँ ने जुलाई में सलमा बीबी को रख लिया था और दूसरे ही वर्ष जनवरी में वह कब्रनशीं हो गई । एक महीने तक दुकान नहीं खोली । महीने बाद एक बकरी हलाल की तो उसकी बच्चेदानी में दो ललछौंहे गहरे बैंजनी रंग के भ्रूण साफ-साफ दिख रहे थे । खत्तनमियाँ को लगा कि मरते वक्त कहीं सलमा बीबी भी आस से तो नहीं थी ? और इसी गम में खत्तनमियाँ ने भी दम तोड़ दिया ।

मिसेज ग्रीनवुड :

मिसेज ग्रीनवुड का मूल नाम मिस एण्डरसन था । संस्कार, शिक्षा और सौन्दर्य का त्रिवेणी संगम । मिरतोला के कृष्णमंदिर और कैलास-यात्रा की लालसा से राबर्ट साहब से मिली थीं, तब वे चालीस पार कर चुकी थीं, पर चेहरे की आभा और अधिक निखर आयी थी । राबर्ट साहब साठ को पहुंच गए थे । बिलकुल अकेले थे और अल्मोड़ा के सिंतोला वन में "ग्रीनवुड काटेज" के एकान्त में अपना निवृत्त जीवन गुजारना चाहते थे । साठ बरस की उम्र में प्रभु की माया कुछ ऐसी व्यापी कि राबर्ट ग्रीनवुड साहब मिस एण्डरसन की छाती से बच्चे की तरह लग गए । ग्रीनवुड साहब ने आपरेशन करा लिया था और चाहते थे कि इस "ग्रीनवुड काटेज" में हमेशा दो जन रहेंगे । उनके साथ उनका खानसामा नौकर शोबन रहता था । सूरज की पहली किरण के साथ मिसेज ग्रीनवुड उसे जगाया करती थी और उसीमें एक बार पाप में पैर फिसला तो फिसलता ही चला गया । " और जब तीसरा आया था, एकदम मासूम बच्चा, सुबह को जगाए हुए शैतान का बच्चा,

तो ग्रीनवुड साहब एक अजीब-सी खामोशी के साथ प्रभु के पास चले गए थे । " 55 बरसों बीत गए । मिसेज ग्रीनवुड का सदाबहार चेहरा झुर्रियों से भर जाता है । ग्रीनवुड काटेज में अब भी दो ही जन रहते हैं — मिसेज ग्रीनवुड और शोबन । मगर मिसेज ग्रीनवुड हमेशा यही महसूस करते रहना चाहती है कि " ग्रीनवुड काटेज में सिर्फ दो ही जने रहते हैं — एक मिसेज ग्रीनवुड और एक मिसेx ग्रीनवुड साहब की आत्मा । " 56 ग्रीनवुड साहब के कपड़े हर शुक्रवार को ब्रश किए जाते हैं । "डिनर-सेट" साफ किया जाता है । शोबन कई बार उन पुरानी पोशाकों को मांग चुका है । डिनर-सेट में खाने की इच्छा प्रकट कर चुका है । पर मिसेज ग्रीनवुड उसे दुत्कार से हुए कहती है — "शोबन , साहब मर भी गया तो हमारा साहब है । तुम जिन्दा भी है , तो साहब का नौकर है । अपना औकात से ज्यास्ती मांगेगा , हम नहीं देने सकता । " 57 और इसी झुंझलाहट में शोबन जब राइस-प्लेट गिरा देता है तो वह शोबन को निकाल देती है । तभी अचानक प्रभु ईसा-मसीह का आदमकद चित्र नीचे गिर पड़ता है और "डिनर-सेट " टूट जाता है । मिसेज ग्रीनवुड चित्र को खड़ा करके उसके पांवों में सिर रखकर बिलख-बिलख कर रोती है — " ओ माई गाड । अभी हम क्या करने सकता ? इन्सान हमको तकलीफ दिया , हम उसको घर से बाहर निकाल दिया .... मगर तुम खुदा होकर उससे भी बड़ा तकलीफ दिया , तुमको कैसे घर से बाहर निकालने सकेगा ? " 58

कपिला :

कपिला — कप्पू घोड़ियानी के सम्बन्ध में किसन पंडित कहता है — " यारो , अथाम जोबन फूट पड़ा है , इस कप्पू घोड़ियानी पर तो । यह मस्तानी नारी सारी बस्ती - पट्टी की औरतों के बीच , भिंडियों की टोकरी में रखी लौकी जैसी , सबसे अलग ही दिखाई देती । मरद जात का मुंह मार रखा है इसने तो । " 59 यह कपिला जब एकदम छोरी थी , तभी बहू भी बन गई और विधवा भी ।

कपिला का पति धरमसिंह घोड़िया था और हलद्वानी और अल्मोड़े के बीच उसके घोड़े चलते रहते थे । उसके पिता के बायें पैर को लकवा मार गया और धरमसिंह को शेर खा गया । घर का बीचखम्भा ही मानो उखड़ गया । धरमसिंह के भाई बहुत छोटे थे । तब जी कड़ा करके कपिला , कपिला छोरी और कपिला बहू से , कप्पू घोड़यानी हो गई । कौन कल्पना कर सकता था बात-बात पर लजाकर घूंघट तान लेनेवाली कपिला शक्ति और सहनशीलता का अवतार बनी घर के बेटे का स्थान ले लेगी । घुंघुरिया दरांती कमर में खोंसे , हाथ में चमड़े का चाबुक हवा में उछालती कप्पू घोड़यानी को देखकर लोग दूर से भले लार टपकाते हों , पास फटकने की कोई हिम्मत नहीं करता था । और इसलिए लोग तरह-तरह से उसके बारे में कहानियां गढ़ते रहते थे कि वह तो किसी दिन किसी पठान को लेकर भाग जायेगी या कि उसने कोई मुसल्ला पाल रखा है । एक दिन काबुल का कोई दवाफरोश पठान एक दुबले-पतले पहाड़ी तरुण को बुरी तरह से पिट रहा था । कपिला से यह देखा न गया । उसने बीच-बचाव करना चाहा । पर तभी पठान ने कपिला को लेकर गंदा मज़ाक किया । उसने आव न देखा ताव और अपनी हथेली का ऐसा घुमचा उसकी कनपटी पर दे मारा कि पठान चारों खानों चित्त । उस तरुण का नाम ध्यानसिंह था । लावारिस था । कप्पू ने उसे रख लिया । कपिला ने यह निर्णय बहुत सोच-समझकर लिया था । पहाड़-सी जवानी काटना मुश्किल है यह तो उसने जान लिया था । दूसरी तरफ सास-ससुर और देवरों को भी पालना-पोसना उसका धर्म है , ऐसा वह समझती थी । अतः अपनी जात-बिरादरी का ऐसा युवक उसने ढूंढ लिया जिसका कोई न हो , जो उसके कहे में चले और जो धरमसिंह का स्थान ले सके । तभी किसन पंडित कहता है — " यार , जजमानो । इस बिल्ली के दांत आखिर यह चूहा उखाड़ेगा , ऐसी अनहोनी हम लोगों ने कहां सोची थी । " 60

दो दुखों का एक सुख :

यह मिरदुला कानी नामक एक भिखारन की कहानी है । मिरदुला कानी है । उसके मां-बाप का, घरवालों का कोई अता-पता नहीं है । रहने का भी कोई ठिकाना नहीं है । जहाँ थोड़ा आसरा मिल गया, रह लिया । इस समय वह करमिया कोढ़ी और सूरदास के साथ रह रही है । अल्मोड़ा के मंदिरों के सामने "साधो, करमगति किन टारी" गाते रहते हैं और भिख मांगते रहते हैं । करमिया को रक्तपित्त हुआ है । सूरदास अन्धा है । करमिया और सूरदास प्रायः कानी को लेकर झगड़ते रहते हैं । ये दोनों मिरदुला को चाहते हैं । जिस प्रकार की पतित ज़िन्दगी ये जी रहे हैं, उसमें दूसरा कोई विकल्प नहीं है । ऐसे में मिरदुला को गर्भ रहता है, तब वह बच्चा किसका होगा, उसे लेकर भी सूरदास और करमिया में बहस होती है और दोनों मन-ही-मन चाहते हैं कि बच्चा उनके जैसा हो । करमिया चाहता है कि वह कोढ़ी हो और सूरदास चाहता है कि वह अन्धा हो । पर दाई जब कहती है कि बच्चा तो चोखा है, तब दोनों हतप्रभ-से रह जाते हैं । दाई कहती है — " भगवान की माया कौन जान सका । कोढ़ी-अन्धों की औलाद और दीये जैसी जोत देतीं आँखें । गोरा-चिट्टा रंग । अच्छा हुआ कानी पर ही गया बच्चा । " 61

रहमतुल्ला :

वैसे तो यह रहमतुल्ला नामक एक अनाथ बच्चे की कहानी है, पर उसमें दो-तीन नारी-पात्र आए हैं — खिमुली, गुलशन बीबी और उदेराम की घरवाली । खिमुली उदेराम की बहन है । विधवा हो गई उसके बाद अल्मोड़ा के फतेउल्ला चूड़ीवाले के घरबार चली गई थी । परंतु रहमतुल्ला के जन्म के बाद दोनों की मृत्यु हो जाती है । अतः मसीदा मस्जिद का मुतीफुद्दौला उसे रख लेता है । मुतीफुद्दौला की

की औरत गुलशनबीबी रहमतुल्ला पर खूब त्रास गुजारती है । खूब काम करवाती है और भूखों मारती है । खिमुली में जहां हमें एक ममतामयी मां के दर्शन होते हैं, वहां गुलशनबीबी तथा उदेराम की घरवाली, ये दोनों औरतें महाकर्कश और झूठी हैं । उदेराम को दया आती है तो वह अपने भाजे को लेने आता है, पर उधर उसकी घरवाली उसे घर में घुसने नहीं देती । " कल सवेरे ही इसको जहां से लाये हो वहां पहुंचा के आओ । इसको तो तुम इस समय ला रहे हो, मगर हमारी बिरादरी में गंगाराम ससुरजी ने तो आज दोपहर से ही हमारी चिलम में तमाकू पीना छोड़ दिया है कि उदिया किससे पूछ के उस मुसलिये की संतान को लाने गया है । पहले तो खिमुली ने नाक कटवायी, अब यह उदिया हमको धरमभिरस्ट करेगा । " [62] उदेराम को यह साहस तो हुआ नहीं कि वह उसे गुलशनबीबी के यहां वापस छोड़ आता, अतः अल्मोड़ा में रास्ते पर ही उसे छोड़ देता है । अतः रहमतुल्ला घंटीवाले xxxx सूरदास बाबा के हाथ लगा । तीन-चार साल उनके साथ घंटी बजाते और भिख मांगते गुजर गये, पर एक दिन नन्दादेवी मंदिर के सामने मंदिर का नादिया [सांड़] बाबा की तरफ ऐसा लपका कि बाबा भी प्रभु के प्यारे हो गये । रहमतुल्ला फिर अनाथ हो गया और हुसैनमियां के पल्ले पड़ा । हुसैन-मियां की बीबी गुलबदन बेगम भी एक ही जालिम है । खूब काम करवाती है और खाने को लातें-घूसे और गालियां । दो-तीन साल उसके वहां निकल जाते हैं, फिर मसीदा मस्जिद के पास "मसीदा मुस्लिम मार्केट " में कूबड़ के यहां काम करता है और बकरियों के गले रेतता है ।

आकाश कितना अनंत है :

इस कहानी का परिवेश मिला-जुला है । जसवंती गांव की है, पर उसका विवाह दिल्ली में हुआ है । जसवंती की मां, राधा भाभी, सरसतीबाई आदि नारी-पात्र इसमें आए हैं । राधा भाभी

अपने गांव के बारे में कहती है — "यह हमारा गांव तो शहर से लगा हुआ है । यहां अच्छी चीज कोई पनपती नहीं है । शहर के इतने नजदीक के गांव में अंगूठा छापों की औलादें भरी हुई हैं ... बेहया खसम की औरत तो रहते सांड़ की रांड़ होती है । " 63 जसवंती की सगाई पहले किसी गांव में हुई थी , पर बाद में उसके मां-बाप वह रिश्ता तोड़कर उसका विवाह दिल्ली में करते हैं । वस्तुतः जसवंती के मां-बाप को शायद कुछ रुपये देकर पटाया गया है । " अभी इतना ही जाना है कि उसकी दिल्ली में खुद की टेक्सी है , मकान है , जिसे शहर की भाषा में फ्लेट कहते हैं । गांववाले भी यही कहते हैं कि दिल्ली शहर का टेक्सी ड्राइवर जिले के कलक्टर से भी ज्यादा कमाता है । गांव में तो यह भी हवा है कि डेढ़-दो हजार दे रहा है । " 64 परन्तु बाद में हकीकत खुलती है कि वह दिल्ली के कूचा चमेलियान के दड़बानुमा मकान में रहता है । दिल्ली की वह बस्ती बहुत ही गंदी है । उसके पति को तपेदिक हो गई है और मरने का इन्तजार कर रहा है । जसवंती अपने पति शमशेरसिंह को कहती है : " अब कुछ नहीं हो सकता । न तुम बदलोगे , न मैं अपने को उस हद तक गिरा सकती हूं , जहां से तुमको सुखी बनाया जा सके । तुम सिर्फ इतना करो , निभा सकते हो तो रूखे-सूखे और फटे-पुराने में दिन काट लूंगी , नहीं निभा सकते हो तो मायके पहुंचा दो । मगर मैं हाथ जोड़ती हूं , मुझे कीचड़ में मत घसीटो । अपने संगी-साथी बदमाशों को यहां मत लाया करो । नहीं तो कभी मैं या तो हंसिये से अपना गला रेत लूंगी या एक-दो कत्ल कर डालूंगी । "65 वस्तुतः शमशेरसिंह ने जसवंती को धोखा दिया था । वह ड्राइवर नहीं , बल्कि क्लीनर था और शादी के बाद साझे की बीबी बनाने के लिए दो-दो बदमाशों से रकम ऐंठ चुका था । इस प्रकार यहां लेखक ने नगरीय जीवन का एक ऐसा पक्ष रखा है , जहां लोग गांवों से लड़कियां खरीद लाते हैं और शहर में उनसे वेश्यावृत्ति करवाते हैं । जसवंती की त्रासदी यही है कि वह मूल्यों में जीनेवाली स्त्री है और इन सबसे घृणा करती है ।

गोपुली गफ़ूरन :

इसी कहानी पर मटियानीजी ने उपन्यास भी लिखा है । गोपुली देवराम टट्हा की घरवाली है । कहते हैं — एक ~~मुख~~× नूर नूर , सौ नूर श्रृंगार । गोपुली कोई विशेष सुन्दर नहीं थी । पर भरी देह , चढ़ती जवानी और तांबे की नयी कलशी-जैसी चमचमाती उमर । इन सब कारणों से अलमोड़ा शहर के कई लोगों की लार उसे उसे देखते ही टपक जाती थी । खीमसिंह होटलवाला उसे "गजगामनी, मिरगलोचनी , चन्द्रमुखी , मनमोहनी " कहता था [66] तो भोपाल शा उसे " कुर्ते के नीचे का कपास का गद्दा " । [67] प्रोफेसर तिवारी की "रायल लैंग्वेज़ " में गोपुली अलमोड़ा शहर के कई दुकानदारों की कंजड़ बुद्धि के लिए "आई॰ क्यू॰ " थी और बहुत से लोगों के "लिविंग स्टैण्डर्ड " और "कैरेक्टर" का "क्राइटेरिया" ।[68] गोपुली गरीब शिल्पकार घराने की थी , अतः उससे ओछी या नीची बातें करने में लोग कोई संकोच या रुकावट का अनुभव नहीं करते थे । जिन लोगों से गोपुली के अनेक प्रकार के स्वार्थों का सिलसिला बंधा हुआ था , उनकी दो-चार ठिठोलियाँ भी उसे सहन करनी पड़ती थीं । गोपुली का पति देवराम भी इसे बुरा नहीं मानता था । भोपाल शा की दुकान पर उसकी उधारी चलती थी । किरपाल दत्त पुरोहित अपने जजमानों को तांबे के कलशे देवराम के यहाँ से ही खरीदने की सलाह देते थे । खीमसिंह होटलवाला गरम-गरम शिकार-भटुवा गोपुली को हाफ-चार्ज में ही खिलाता था । अतः इन लोगों के गंदे मज़ाक और छोटी-मोटी हरकतें गोपुली बरदाश्त कर लेती थी । शुरू-शुरू में उसे कुछ अटपटा भी लगा पर बाद में तो वह उसकी अभ्यस्त हो गई और अपने रूप और सिंगार का उसे कुछ नशा-सा भी हो चला और उनकी चुहल-भरी चर्चाओं में से उसे एक विशिष्ट किस्म का सुख भी मिलने लगा । पर देवराम की असमय की मृत्यु ने उसके जीवन का नक्शा ही बदल डाला । एक साल बितते-बितते यह

नौबत आ गई कि अपने बच्चों को पालने-पोसने के लिए गोपुली को अहमद अली फड़वाले के घर बैठ जाना पड़ा और गोपुली , गोपुली गफूरन हो गई । गोपुली के बेटे हरराम-नरराम का खतना कराकर उनको बना दिया — हसरत अली और नसरत अली । "भीमसिंह की नीयत नहीं बदली थी , मगर मोहब्बत की तश्तरियों से बालकों का पालन-पोषण नहीं हो सकता था । किरपाल गुरु मदद करने को तैयार थे , मगर गोपुली को तांबे के कलशों पर फूल निकालने की कला नहीं आती थी और बिरादरी के लोगों ने ऐसी पीठ फेरी कि आसरा देने की जगह ताने मारने लगे । और "दुःख के दिनों में जो आसरा दे , वही सच्चा मालिक है । "[69] पिछड़ी जातियों में जो धर्म-परिवर्तन हो रहे हैं , उनके कारणों को भी यहां तलाशा जा सकता है । गफूरन होने के पश्चात् गोपुली को घर में ही एक तरह से कैद हो जाना पड़ा । फेस्टीवल की बात सुनी तो उसे कुछ राहत का अनुभव हुआ । पर बुरके की बात ने तो उसके मूड को ही खत्म कर दिया । जब शौकतहुसैन की घरवाली बशीरन ने गोपुली से पूछा कि क्या उसे फेस्टीवल में मज़ा नहीं आया , तो उसके जवाब में गोपुली ने कहा था — " अपने मजे की बात तुम्हीं लोग जानो री । मुझे तो जो कुछ मजा आना था , पिछले साल तक आ चुका । अब तो सिर्फ सजा बाकी रह गयी है । "[70]

चील :

चील एक भयंकर दरिद्रता की कहानी है । यद्यपि कहानी रामखेलावन नामक एक बच्चे के आसपास बुनी गई है ; तथापि आलोच्य विषय की दृष्टि से इसमें दादीमां , सतनारायनी , शुक्लाइन तथा रामो जमादारनी जैसे नारी-पात्र आए हैं । रामखेलावन को प्यार तो दादीमां और सतनारायनी से ही मिला था । शुक्लाइन के यहाँ उसकी मां बरतन मांजने जाती थी । रामखेलावन जब उसके यहां जाता था तो वह उसके पूरे शरीर को टटोलती थी कि कहीं कोई चीज

तो चुराकर नहीं ले जा रहा । अतः शुक्लाइन से वह नफरत करता था । रामो जमादारन गन्दे नाले साफ करती है , तब बू से उसकी नाक भर जाती है । उस बू के कारण ही खेलावन उसे याद रखता है । उसका बाप एक नम्बर का शराबी था , पर उस धुत अवस्था में भी उसके लिए खाने की कोई चीज लाना नहीं भूलता है । उसका बाप जब नशे में धुत होकर लुढ़क जाता था , तब उसकी दादी उसके मुंह को अपनी धोती से पोंछती थी और पंखा झलकर मक्खियां उड़ाती थी । फिर बुढ़िया चुपके से उसकी जेबें टटोलती और पैसे हुए तो अपनी कमर में खोंसती और बिस्कुट-गोलियां आदि खेलावन को खिला देतीं । इस कहानी में लेखक ने सतनारायनी की दयनीय और करुण अवस्था का यथार्थ चित्रण किया है । पति की ओर से मिली उसे भयंकर गरीबी , लातें , घूंसे और गालियां । परन्तु उसके मरने पर सतनारायणी फूट-फूट कर रोयी थी । बच्चे की परवरिश के लिए वह दो-तीन घरों में काम करती है , परन्तु स्वास्थ्य उसका साथ नहीं देता । उसको प्रायः खून की उल्टियां होती हैं । अ×××× मौत की बदहवाशी में वह खेलावन को कहती है — " तू घबराना मत रे खिलावन । तनिक खटिया पर से उठें , तो तेरी परवरिश तो बेहवा , हम ... " 71 पर मौतरूपी चील उसको उठा लेती है ।कहानी में "चील" के प्रतीक को लिया गया है । एक बार खेलावन को उसके बाप ने गोश्त की पोटली घर ले जाने को दी थी , पर रास्ते में चील झपट्टा मारके उसे ले गयी थी । जिस दिन उसकी मां मरी उस दिन खेलावन मुर्दे पर जो पैसे फेंके जाते हैं उनको जैसे-तैसे बटोरकर आ रहा था , तभी कल्लन जोर से चिल्लाया था — " जा साले , ले जा । घर पर तेरी अम्मां मरी पड़ी है । साले , तू भी तो बिखेरेगा पैसे अपनी अम्मां की ल्हाश पर ... ? " 72

<u>मैमूद :</u>

यह इल्दाबाद के मुस्लिम परिवेश की कहानी है । मैमूद

जद्दनबीबी का पालतू बकरा है और उसे वह बहुत प्यार करती है । अपनी पडोसन रहीमन से एक स्थान पर वह कहती है — " अब तुझे यकीन नहीं आएगा , बे×××× रहीमन । ये साला तो बिलकुल इंसानों की तरह जज्बाती है । ... इन्सान जब बूढ़ा हो जाता है , तब कोई ऐसा उसे चाहिए , जो उसके ' आ ' कहने से आए और ' जा ' कहने से जाए । दुनियावालों की दुनिया जाने , सुलेमान की अम्माँ । मेरा तो यह नामुराद मैमूद ही है, जिसे× जिस साले को इस खुल्दाबाद की नली वाली गली से आवाज़ लगाऊं कि —' मैमूद । मैंमूद । ' तो चुगद नखासकोने के कूड़ेखाने पर पहुंचा हुआ पीछे पलटता है और ' बें-बें ' करता वो दौड़ के आता है मेरी तरफ कि तुजान , सगी औलाद क्या आयेगी । बस , साला जब कुनबापरस्ती पर निकलता है , तो मेरी क्या खुदा की भी नहीं सुनेगा ।" [73]जद्दन अपने बकरे को बहुत चाहती है । उसके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं सुन सकती । ऐसे में बेटे शराफत के लिए रायबरेली से रिश्ते की बात आती है । घर में तंगदस्ती चल रही है । गोश्त का भाव बाजार में दस रूपये किलो चल रहा है । और लिहाजा मैमूद को ही हलाल किया जाता है । जद्दन अशरफमियां के लाख समझाने पर पर भी उस दिन खाना नहीं खाती है । वह जहरबुझी आवाज में बोल उठती है —' 'तुम बेदर्दों ' से ये भी ना हुआ कि मैं अव्वल दर्जे की गोश्तखोर औरत जब कै रही हूं कि 'बेटे शहनाज , हमें गोश्त-वोश्त ना देना । ' तो इसकी कोई तो वजह होगी ? और जहीर के अब्बा इंसान दाढ़ी बढ़ा लेने से पीर नहीं हो जाता । तुम ये मुझे क्या नसीहत दोगे कि सभी बकरों के दो सींग होते हैं ? इतना तो नाहीदा भी जानता है । दुनिया में सारे इंसान भी खुदा ने दो सींग वाले बकरां की तरह , दो हाथ - दो पांव वाले बनाये ? लेकिन औरत तो तभी रांड़ होती है , जब उसका अपना खसम मरता है ? अम्मा तो तभी अपनी छाती कूटती है , जब उससे उसका अपना बच्चा जुदा होता है ? "[74] जद्दन को इतना दुःख तब न होता ,

यदि मैमूद को बेचकर बाजार से गोश्त लाते या दूसरा बकरा खरीद लाते । मैमूद को वह अपना बेटा समझती है और एक माँ अपने बेटे का गोश्त कैसे खा सकती है ।

प्यास :

"प्यास " बम्बई के परिवेश पर आधारित कहानी है । इसमें कृष्णाबाई , ताराबाई , नागम्माबाई , एक पारसी महिला आदि नारी-पात्र हैं । दारू , मटका , उठइगिरी आदि का माहौल इसमें उसके यथार्थ स्वरूप में चित्रित है । शंकरिया ने एक पारसी महिला की सोने की चेन तोड़ने का प्रयास किया था , उसमें वह पकड़ा जाता है । ग्रान्ट रोड़ चौकी की पुलिस उसकी खूब धुनाई करती है , तब उस पर जो बेहोशी छाती है , उसमें उसके विगत जीवन की कुछ स्मृतियां उभर आती हैं । पांडुरंग मामा ने भीख का व्यापार फैला रखा है । अपनी अट्ठावन बरस की उमर में दस साल खुद भीख मांगकर और बत्तीस साल दूसरों से भीख मंगवाकर मजे से जीने का उसका तजरबा है । [75] पचास लड़के उसने इस व्यवसाय में छोड़ रखे हैं । मुर्दाघर से मुर्दे लाकर , उस पर रोनेवाले बिठाकर उसने भीख के पैसे इकट्ठे किये हैं । शंकरिया को जब वह तीन महीने का था , अनाथाश्रम से पचास रूपये में मामा का रिश्ता देकर खरीद लाया था । पांडुरंग वह बच्चा कृष्णाबाई को बेच देता है । कृष्णाबाई खुद एकदम काली और विधवा थी । उसका पति रामचन्द्रन रेल-दुर्घटना में मर गया था । तबसे कृष्णाबाई भीख मांगने का काम करती थी , मगर बच्चेवाली भिखारियों के मुकाबले उसे बहुत कम भीख मिलती थी । अतः उसने पांडुरंग मामा को कह रखा था कि कोई बच्चा उसके हाथ में आवे तो पहले उससे सौदा उससे कर ले । पांडुरंग जब अनाथाश्रम से शंकरिया को लाता है तो कृष्णाबाई से कहता है -- " बाई , नकद पचास की रकम और भानजे का रिश्ता लगा करके इस छोकरे को खरीदा है । सूरत का गोरा और खूबसूरत है ।

भीख माँगते समय होशियारी से काम लोगी , तो चाँदी पिटवा देगा छोकरा । किसी ऊँचे घराने की लक्ष्मी की औलाद मालूम पड़ता है । नामे का सिकन्दर निकलेगा । तो बाई , जब तक इस छोकरे से बिजनेस करोगी , एक रूपया रोज लूँगा और अगर तुम्हारी किसी लापरवाही या बीमारी से यह मर गया तो तुम्हें पूरे पचास की रकम एकमुश्त मुझे देनी होगी । ' [76] कृष्णाबाई भिखारिन थी , पर उसका कलेजा माँ का था । वह शंकरिया को अपनी औलाद की तरह रखती है और एक दिन उसको बचाते हुए ही वह खुद कट मरती है । उसके बाद शंकरिया ताराबाई के पल्ले पड़ता है । ताराबाई पांडुरंग की रखैल भिखारिन है । शंकरिया की कमाई से ताराबाई का दारू का खर्चा निकल आता है । यही शंकरिया बाद में जेबकतरा और उठाईगिर बनता है । नागम्माबाई दारू बेचने का काम करती है ।

इब्बू मलंग :

इसमें भी बम्बई की निम्नवर्गीय ज़िन्दगी को चित्रित किया गया है । वैसे तो यह इब्बू मलंग उर्फ इब्बू मस्तान उर्फ इबादतहुसैन को कहानी है ; पर उसमें सुन्दरीबाई {सईदन} , सुलतानी भंगिन और शकुन्तला घाटन जैसे नारी-पात्र मिलते हैं । इबादतहुसैन को सिफ़ीलीस होता है और वह बाजार की सुन्दरीबाई को अपना वह रोग दे आता है । बाद में उसे पता चलता है कि वह सुन्दरीबाई उसकी चचाजाद बहन सईदन थी । सईदन उसी रोग में मर जाती है । उसके गम में इबादतहुसैन इब्बू xxxxxxxxxxxx मस्तान हो जाता है । होटलों के ढेर-के-ढेर बर्तन माँजता है और गांजा-चरस-दारू पीके कचरे के ढेर पर पड़ा रहता है । नबीपाड़े का दादा नागप्पा उसे इब्बू मस्तान से इब्बू मलंग बनवा देता है । इब्बू मलंग के आसपास मनगढ़न्त कहानियाँ जोड़ी जाती है कि इब्बू मस्तान के रूप में ख्वाजा अजमेरवाले पीर बंगालेवाली जादू की बेगम को साथ लिए घूमते फिरते थे । उसे मामूली-सी कुतिया समझकर रमजान और कादिर ने छुरा

भरके× भोंक दिया , तो अब हालत यह है दानों की चार दिनों से कि टट्टी-पेशाब बन्द है और जबान को यों लकवा मार गया है कि "या खुदा , या पीर , या मलंग " के अलावा कुछ निकलता ही नहीं है ।[77] लाख-लाख माफियां मांगते हुए नागप्पा दादा ने इब्बू मलंग को नबी-पाड़े में ही रोक लिया है और बंगालेवाली की खूबसूरत मजार बना दिया है । पहली पड़ती जुमेरात को बंगालेवाली की मजार पर उर्स जुड़ गया । कव्वालियों की धूम मच गई । मजार और इब्बू मलंग के कदमों पर माथा टेकने , दूर-दूर कोलीवाड़ा , भिंडी बाजार , पिल-हाउस , कांदीवाड़ी , हाजी अली , मुंगरापाड़ा , डोंगरी , वरली , मसजिद बन्दर यानी — लगभग सारे बम्बई शहर से — औरत-मर्दों के रेले आते रहे । नबीपाड़े की सुलतानी भंगिन भी मत्था टेकने आयी । यही सुलतानी भंगिन कभी इब्बू मस्तान पर थूंक कर चली गई थी । नशे की हालत में मलंग ने अपनी लुंगी को कंधों तक चढ़ा दिया तो सुलतानी ने श्रद्धापूर्वक अपनी आंखों को मूंद लिया । गली में जाती हुई सुलतानी को नागप्पा दादा और रमजान ने घेर लिया और पांच का पत्ता थमाते हुए उसके कानों में कुछ फुसफुसाया×× फुसफुसाया कि "क्लोजिंग" का आंकड़ा सुनते ही शोर मचाती हुई मलंग के कदमों पर मत्था टेकने पहुंच गई "" या मेरे पीर , या मेरे मलंग , मेरे गुनाहों को बख्श । ... अरे मुझ कमीनी की औकात ही कितनी हुई , मेरे मौला ? पीर फकीर ने लुंगी उठाकर दरसन दिखाए , तो मैं उल्लू की पट्ठी शरम के मारे गालियां देने लगी । मगर फिर ख्याल आया कि मेरे पीर-फकीर ने तो मुझे आंकड़ा दे दिया है । लगा आई अठन्नी का डबल आंकड़ा , तो वही इक्के से तिग्गी का नम्बर आ गया , मेरे मौला , मेरे मलंग । "×88 78 सुलतानी भंगिन की घटना के बाद शकुंतला घाटन जब भी मजार से गुजरती है , मलंग को हसरतभरी निगाहों से देखती है । उसका पति माधोराव लोकल-ट्रेन से कटकर मर गया था । शकुंतला लोगों के घरों में बरतन-भाड़े करके बच्चों को पाल रही थी । वह खुद हमेशा माधोराव को

सट्टा खेलने से बरजती रही है, पर बच्चों के भविष्य का खयाल करके उसके मन में लालच आ जाता है और वह मलंग द्वारा संकेतित आंकड़े पर अपनी सारी जमा-पूंजी लगा देती है और जब वह आंकड़ा नहीं लगता है तब विलाप करते हुए कहती है —" अबे, ओ मलंग, ओ मस्तान ? अबे ओ, चोर-गिरहकट ! घुस जाए तेरी बंगालेवाली की पूंछ तेरी महतारी के ! अबे ओ, हरामजादे, कर दिया तूने आज मुझ विधवा-रांड़ को हलाल !" [79] वह और भी गालियां बकती है । तब नागप्पा दादा उसे डरा-धमकाकर भगा देना चाहते हैं । उस समय अचानक झब्बू मलंग को न जाने क्या हो जाता है कि वह सबको परे करता हुआ आगे आता है और नागप्पा को गाली देते हुए कहता है —" तू परे हट बे, दोजख के कुत्ते ! स्साला आया बड़ा पीर-फकीर की दुआ देनेवाला । तू कौन है अपनी भैन का कटड़ा, मुझे पीर-मलंग बनानेवाला ? यह बेचारी महतारी ठीक कहती है कि मैं मलंग नहीं चोर-लबार और मक्कार हूं । ... और तू भी पक्का बदमाश और जालसाज है मादर ..." [80]

भय :

इस कहानी में भी निहायत निम्न और सड़े हुए समाज की कथा को लिया गया है । नारी-पात्र के नाम पर इसमें कथा-नायक "मैं" की मां और ननकू की औरत है । उसके पिता की मृत्यु हो जाने पर "उसकी मां अत्यन्त करुण स्वर में चीखते हुए जिस तरह उसकी जेबों को टटोलने लगी थी" उसको स्मरण करते हुए उसे लगता है कि मनुष्य और जानवरों में कोई खास फर्क नहीं । [81] एक बार चौक में उसने एक मरा हुआ बैल देखा था । एक गाय उसके मुंह में दबे केले के छिलके को खींच-खींच कर खा रही थी । उस दृश्य को देखकर उसे मां वाली घटना याद आयी थी । यहां गौरतलब मुद्दा यह है कि वह कौन-सी मजबूरी रही होगी कि एक पत्नी मरते पति की जेबों को तलाशती है । दूसरे इस कहानी में जो सबसे भयावह स्थिति है, वह यह कि यहां मनुष्य

की संभावना पर ही प्रश्नचिह्न-सा लग गया है और जो अमानवीय स्थितियां उभरकर आ रही हैं उनसे चित्त भयाक्रान्त हो जाता है। सीताराम भिखारी की लावारिश लाश इसका नायक कहीं से उठा लाया है और उस पर रोने के लिए ननकू की बीबी को मय दो बच्चे बुला लाया है। ननकू की बीबी दहाड़ें मारकर रो रही है कि कोई अपने खसम पर भी क्या रोता होगा। यहां ननकू की बीबी की बेहयाई और उसके पीछे की उसकी गरीबी और बेबसी सब अनकहे ढंग से अपने आप उजागर हो गया है। कहानी में यह भी संकेतित हुआ है कि ननकू की औरत बरसों दारू और रंडी का पेशा भी करती रही है।

मिट्टी :

"मिट्टी" भी एक हृदयग्रापक कहानी है। लगता है इन्हीं कहानियों के कारण मटियानीजी याद किए जाएंगे। गनेशी इलाहाबाद की सड़कों पर भीख मांग रही है। बीच में दो-तीन पुरुषों ने अपना स्वार्थ निकालकर उसे छोड़ दिया है। इस प्रकार रहते खसमों के भी एक प्रकार से वह विधवा है। ऊपर से दो बच्चों की ~~xxxx~~ परवरिश उसके जिम्मे है। अतः प्रायः वह किसी कोढ़ी से संबंध गांठ लेती है और उसकी गाड़ी को घुमाते हुए दो पैसे कमा लेती है। कहानी में ~~xx~~x लालमन नामक कोढ़ी की गाड़ी ढोते हुए उसे बताया है। ~~xx~~ लालमन का गू-मूतर सब उसे धोना पड़ता है। लालमन खाने का बड़ा लालची है। दस्त लग गए हैं, फिर भी जलेबियां खाने का मन करता है। गनेशी उसकी दवा लेने जाती है, तब डाक्टर के मुंह से किसी दूसरे मरीज के सन्दर्भ में ~~ड्ड~~ "डायाबिटीज" के बारे में सुन लेती है कि उस रोग में मीठा जहर के समान होता है। अतः वह ~~गनेशी~~ लालमन के मन में यह डर बिठा देती है कि उसे "डायाबिटी" है, ताकि वह अपने बच्चों के लिए दो पैसे ज्यादा जोड़ सकें। " लालमन की मृत्यु की कल्पना करना, गनेशी के लिए, अपने-आपको ही डराना है। सत्रह-अठारह वर्षों की फजीहतों से भरी जिन्दगी के बाद, अब

थोड़ी-सी राहत मिली है । चार-पांच सौ भी लालमन के लुढ़कने के पहले किसी तरह जमा हो जाते , तो एक बार फिरसे कहीं पान-बीड़ी की गुमटी लगाने की कोशिश करती । ... जब भी कल्पना करती है कि ये दो बेटे मरते दम तक उसके ही साथ रहेंगे और चाहे रिक्शा-मजूरी करें , चाय-पान की गुमटी चलाएं , सास की तरह घर चलाने का अवसर कभी उसे भी मिलेगा , तो गनेशी बहुत भावुक हो उठती है । " [82] और इस प्रकार उसके भीतर एक संसार निर्मित होता चला जाता है । पर गनेशी निहायत स्वार्थी भी नहीं है । दो पैसे बचाने के लिए वह लालमन को "डायाबिटीज" का डर तो दिखा देती है , पर कुछ समय के बाद खुद कहती है — " अब तो बस , इन दोनों पर प्राण टिके हैं । अपना खाया तो हराम लगता है, इनके मुंह में जाता दाना मोती है । ... और सुन , लालमन , अभी ऐसी कौन-सी लाइलाज हालत में तेरी बिमारी पहुंच गई । एक-दो जलेबी दहीं के साथ खा लिया करना । " [83] और फिर उसके गोड़ दबाने बैठ जाती है । पर गनेशी के ये सपने भी "मिट्टी" हो जाते हैं , क्योंकि दूसरे ही दिन सवेरे लालमन की मृत्यु हो जाती है । कहानी का अंत इस प्रकार है — " चलो रे छोकरो , यहां से चले चलें । कहते हुए उसने दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगाकर भींच लिया और फूट-फूटकर रो पड़ी । " [84]

भविष्य :

"भविष्य" डाकाजनी और राहजनी का काम करने वाले राधे काछी की कहानी है । इसमें दो नारी-पात्र विशेषतया उपलब्ध होते हैं — शांति अहिरन और शाहिदा बीबी । शांति अहिरन किशना अहिर की पत्नी है । इन दोनों के अतिरिक्त जमुना तवायफ का भी कुछ जिक्र मिलता है । जमुनाबाई जौनपुर की तवायफ भी है और पुलिस की मुखबिर भी । इसी जमुनाबाई के कारण राधे काछी को जौनपुर छोड़ना पड़ता है । बाद में खुल्दाबाद वाले मुहम्मद इस्लाम से उसकी

मुलाकात होती है । शाहिदा बेगम मुहम्मद इस्लाम की बीबी है । उसकी बोली मर्मस्पर्शी होती है । वह सौम्य और आत्मीयतापूर्ण है । राधे काछी उनकी इज्जत करता है और सोचता है कि ऐसी स्त्री एक रहजन की घरवाली कैसे हो सकती है । एक बार राधे काछी ने इस्लाम से पूछा था कि उसके इतने खूंखार और खतरनाक पेशे के बावजूद शाहिदा बेगम में इतनी शालीनता और बच्चों के भविष्य के प्रति ~~xx~~ निश्चिंतता क्यों है, तब इस्लाम की आँखें नम हो आयी थीं और उसने कहा था -- " वह औरत मेरे हश्र को जानती है और घर में मुझसे झगड़ा-फसाद मचाकर अपने बच्चों को हादसे में नहीं डालना चाहती । " 85 और सुलेमसरायवाली डाकाजनी में इस्लाम फौत हो जाता है । राधे काछी को साढ़े तीन साल की सजा हुई थी । उसे काटकर नैनिताल की जेल से जब वह छूटता है तो अचानक उसके पैर शांति अहिरन के ठेले की ओर मुड़ पड़ते हैं । किशना की मृत्यु हो ~~चुकx~~ चुकी है । शांति अपने देवर-जेठ की परवाह नहीं करती । वह बड़ी साहसी और जीवट वाली औरत है । एक स्थान पर राधे से कहती है — " किसना का सगा तो कोई नहीं, सब ससुर चचाजाद हैं । बड़ा चचेरा तो एक दिन साफ-साफ कहे लगा कि हमारे बैठ जाओ । हमने मीठे में ही कह दिया, 'अपनी बहनियाँ को बिठाय लो ।' कभी तुम देखे हो उसकी शकल ? तीन-तीन घरवालियाँ पिरेत की तरह खा गया ससुर । अरे, हम औरत जात हैं, तो क्या हो गया ? न मिलेगा कोई मन के माफिक, तो बच्चों के सहारे जिन्दगी काट लेंगे । अब कौन-सी जवानी सिर पर है, जो दुनिया-जहान की फिकिर करेंगे । " 86 कहानी के अन्त में संकेतित किया गया है कि शायद शांति अहिरन राधे काछी के साथ अपना घर-संसार बसावे ।

भावना की सत्ता :

यह एक पत्र-शैली में लिखी कहानी है । यह कहानी लेखक

के बम्बई-जीवन के अनुभवों पर आधारित प्रतीत होती है । इसमें दो नारी-पात्र आए हैं — सुमन और केलेवाली मराठन की लड़की । यह कहानी एक प्रकार से उनके उपन्यास – " किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " के लघु-संस्करण जैसी है । सुमन धनाढ्य परिवार की , आधुनिक सभ्यता में पली हुई लड़की है । वीरेन एक गरीब लड़का है । उसकी कविता की भाव-प्रवणता सुमन को छू लेती है । वह वीरेन को चाहने लगती है । वस्तुतः सुमन की यह चाहत एक विलास है । प्रेम करना भी अमीरों का एक शौक होता है । उसमें गंभीरता नहीं है । अतः जैसे ही उसे वीरेन का वह पत्र मिलता है जिसमें उसने स्वयं को उसका भाई बताया है , वह उखड़ पड़ती है और वीरेन का मजाक उड़ाने के लिए पत्र लिखती है जिसमें वह वीरेन को "भावनाओं की सत्ता के सम्राट वीरेनजी । " जैसे शब्दों से सम्बोधित करती है । सुमन के पत्रोत्तर में वीरेन लिखता है — " तुमने मेरे ऊपर जो व्यंग कसे हैं , उनसे मुझे इतना ही दुःख हुआ है , कि तुम्हारा हृदय ओछा निकला । ... मैं टैक्सियाँ धोने का कार्य करता हूं , केलेवाली मराठन के घर रहता हूं , यही नहीं , उसकी फूहड़ लड़की से प्यार भी करता हूं । उस फूहड़ लड़की से जिसे रूप-लावण्य तो प्रकृति ने खैर , दिया ही नहीं , सभ्यता जैसी चीज से भी कोसों दूर रक्खा है । " [87] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में लेखक ने यह बताया है कि जब कथा-नायक सुमन की विलासिता का साधन नहीं बनता , तब वह अपने ओछेपन पर उतर आती है ।

इल्लैस्वामी :

इल्लैस्वामी बम्बई का एक नामचीन दादा है । चिंचपाकली, दादर, फारस रोड , खेतवाड़ी जैसे क्षेत्रों में उसकी उस्तादी में कई लड़के काम करते हैं । वह बड़े लोगों की सोपारियाँ भी लेता है । उसकी छोटी बहन यनम्मा बेंगलोर वेंकटेश्वर मंदिर के सामने भीख

मांगती थी और उसमें ही उसकी मृत्यु हुई । बैंगलोर से बम्बई बिना टिकट आते हुए वह पकड़ा गया और धारवाड़ के बच्चों के जेल में भेज दिया गया , जहाँ से वह "इल्लेस्वामी" होकर बाहर निकला । यनम्मा के अलावा इस कहानी में अन्य दो नारी-पात्र मिलते हैं — आयशाबाई और एक विधवा मराठी लड़की । आयशाबाई वेश्या है और उसे इल्लेस्वामी से खूब पैसे मिलते हैं , फिर भी उसके पूछने पर कि वह उसे नफ़रत करती है , आयशाबाई स्पष्ट उत्तर देती है — " नहीं स्वामी ? तुमसे नफ़रत क्यों करूंगी ? इन पांच वर्षों में जितना पैसा तुमसे पाया है , किसी और से नहीं । मगर पैसा और हविश एक चीज है , मुहब्बत दूसरी । बिलकुल दूसरी चीज , स्वामी । " 88 विधवा मराठी लड़की होरमसजी सेठ के यहां काम करती थी । एक दिन मौका देखकर होरमसजी उसकी इज्जत लेना चाहता है , तब वह होरमसजी के मुंह पर थूककर चली गई थी । होरमसजी ने ठान लिया था कि उसने मेरे मुंह पर थूका है , तो मैं अपने थूक से उसके मुंह को गन्दा करूंगा । इस काम के लिए वह इल्लेस्वामी को "सैपारी" देता है , पर उस लड़की को देखकर स्वामी को अपनी बहन यनम्मा याद आ जाती है और वह उसे अपनी बहिन बना लेता है — "यह भी लावारिस लड़की है । कहता क्या सेठ , हम इसको अपनी बहन बनाया । अपना यनम्मा बनाया , सेठ । " 89

जिसकी जरूरत नहीं थी :

इस कहानी में मटियानीजी ने नारी-जीवन के एक दूसरे ही आयाम को प्रस्तुत किया है । बम्बई के प्रिन्सेस स्ट्रीट का एक पारसी सेठ , जो बूढ़ा है , तुम्मी नामक मराठी क्रिश्चियन लड़की से शादी करता है , परन्तु उसकी शारीरिक-क्षुधा को तृप्त करने की क्षमता उसमें नहीं है । अतः वह जवान हट्टे-कट्टे लड़कों को नौकर के रूप में लाता है और तुम्मी की हविश को पूरी करवाता है । कहानी-नायक शिशिर एक पहाड़ी लड़का है और नौकरी की खोज में बम्बई

आया हुआ है । पारसी सेठ उसे अपने यहाँ ले जाता है । तुम्मी उसे बहुतेरी लालच देती है , पर शिशिर उसके लिए तैयार नहीं होता , तब पारसी सेठ उसे यह कहते हुए नौकरी से निकाल देता है कि — "हमको तुम्हारी जरूरत नहीं । " [90] मटियानीजी के उपन्यास "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " तथा "कबूतरखाना" में ऐसे कई नारी-पात्र मिलते हैं । इनकी गणना हम विपुलवासनावती नारियों में कर सकते हैं , परन्तु उनको वहाँ तक पहुँचाने वाले तो धनवान पुरुष ही होते हैं ।

किसी से न कहना :

इसमें लेखक ने लोककथा के माध्यम से जीवन के एक तथ्य की व्याख्या मनोरंजक ढंग से की है । कथा-नायक पिंगल एक ब्राह्मण-पुत्र है । मरते समय पिता उससे कहते हैं — " बेटा पिंगल । बहू विश्वस्ता से मुझे भी अगाध स्नेह-प्यार है , फिर भी , इतना तुझसे कह जाना चाहता हूं — स्त्री मन की कच्ची होती है । जीवन के गुरुतर-गोपन रहस्यों से उसे सदैव अपरिचित ही रखना चाहिए । " [91] पिंगल को पिता की यह बात अच्छी तो नहीं लगती , पर वह विश्वस्ता की परीक्षा लेना चाहता है । एक बार वह विश्वस्ता से कहता है कि किसीको कहना नहीं पर आज जब मैं ईमानदारी से पेट-भर अन्न नहीं जुटा पाया तो पनचक्की से चारुदत्त की अन्न की थैली चोरी-चोरी उठा लाया । आपदधर्म में सब चलता है , पर तुम किसीसे कहना मत । पर विश्वस्ता के पेट में यह बात पचती नहीं है । वह यह बात अपनी पड़ोसन राधिका को , राधिका अपनी देवरानी शैवाली को और शैवाली ने अपनी सहेली को "किसीको न कहना" कहकर कहती हैं और बात सारे नगर में फैल जाती है । पिंगल को राजा के सिपाही पकड़कर ले जाते हैं । कुछ समय बाद पिंगल रुमाल में कुछ लपेटकर लाता है और पत्नी विश्वस्ता से कहता है कि पहली गलती थी सो राजा ने तो क्षमा कर दिया , पर रास्ते में चारुदत्त

से झगड़ा हो गया और मैंने उसका सिर काट लिया । विश्वस्ता ने रूमाल में [illegible] बंधा सिर संदूक में रख दिया । पिंगल ने फिर उसे ताकीद की कि यह बात किसीसे न कहना वर्ना उसे फांसी हो जायेगी । पर रहस्य की यह बात विश्वस्ता के पेट में गर्भस्थ-शिशु की भांति बढ़ने लगी और आसन्न-प्रसवा सी छटपटाने लगी । अतः अबकी बार यह बात उसने सुनयना से कही , सुनयना ने रूपवती , [illegible] रूपवती ने लाजवन्ती को कही और इस प्रकार "किसीसे न कहना " के माध्यम से बात पुनः समूचे नगर में फैल गयी और राजा के सिपाही पिंगल को पकड़कर ले गयी । शामको पिंगल और चारुदत्त हंसते हुए आ रहे थे । पिंगल ने जिसको चारुदत्त का सिर बताया था , वह वस्तुतः बकरी का कटा हुआ हुआ सिर था ।

<u>चिथड़े :</u>

गेंदी गांव का एक सीधा-सादा सरल युवक है । पांडु उर्फ प्रीतम उसे बम्बई के बड़े-बड़े ख्वाब दिखाकर ले जाता है और रात में गेंदी के रूपये-पैसे मारकर छू-मंतर हो जाता है । उसका टिकट भी बटुए में चला जाता है । अतः बिना टिकट सफर करने के कारण एक रात उसे हवालात में काटनी पड़ती है । बाद में एक दूसरा बम्बईगिरा उसे अपनी मीठी-मीठी बातों में फुसलाकर उसका कम्बल और बिस्तरा मार जाता है । अंत में अपनी चांदी की करधनी बेचकर वह पुनः गांव पहुंचता है । इसमें बम्बई की फैशनेबुल नारियों का चित्रण है जो ऊंची-ऊंची सैंडिलों पर मछलियों -सी फुदकती-फुदकती रहती हैं । उनकी वेशभूषा ऐसी होती है कि करीब-करीब अधनंगी-सी दिखती हैं । दूसरी ओर जिन रेशमी परदों की बात पांडु करता था वे फोकलैण्ड रोड़ की वेश्याएं हैं , " जहां इन्सान कहाने वालों की मां-बहिनें पावडर-लिपस्टिक की भद्दी परतों से चेहरे को ढके हुए , सरे-बाज़ार नारीत्व का सौदा करती हैं । " [92] इस प्रकार बम्बई में नारियों को लेकर दो प्रकार का नंगापन मिलता है —

"दो प्रकार का नंगापन —
मासूम और जहरीला नंगापन
मजबूर और मगरूर नंगापन
अमीर और गरीब नंगापन । " [93]

इस प्रकार गेंदी की कल्पना के रेशमी पर्दे मानवता के पलित चीथड़ों में बदल जाते हैं ।

प्रेरणा की पूंजी :

प्रस्तुत कहानी में अनु नामक नारी-पात्र का चित्रण हुआ है । कहानी नायक वीरेन प्रतिभाशाली है , पर बम्बई में एक सामान्य-से होटल में प्लेटें धोने का काम कर रहा है । सगे-[illegible]××[illegible] संबंधियों तथा मित्रों से वीरेन को कटु अनुभव हुए थे , अतः उसमें पर्याप्त कटुता आ गई है । ऐसे में जितेन्द्र नामक एक व्यक्ति का पत्र मिलता है जो लोनावला में आफिसर के पद पर हैं । "नवभारत टाइम्स" में वीरेन की कविता पढ़कर , वहीं से पता मालूम करके उन्होंने पत्र लिखा था । वे वीरेन को अपना भाई मानते हैं । अनु इन्हीं जितेन्द्र की पत्नी है । 11-12 वर्ष की उम्र में अनु जितेन्द्र की दूसरी पत्नी बनकर आयी थी । वीरेन ही उसे घोड़े पर बिठाकर लाया था । अनु वीरेन को भाई भी मानती है और देवर भी । अनु वीरेन को बचपन से जानती है । वह बचपन में काफी नटखट थी और "नाक काटूं तेरी , तू गिल्ली ला मेरी " [94] कहकर वीरेन के नाक-कान पकड़ लेती हैं । वीरेन अनु को बहुत चाहता है । जितेन्द्र के बहुत आग्रह पर वह लोनावाला जाता तो है , पर वहां अधिक ठहरने के लिए तथा उनसे कोई आर्थिक सहायता लेने के लिए साफ मना कर देता है । वह जितेन्द्र से कहता है — " मैं आपके पास से बहुत कुछ ले जा रहा हूं , भैया । जिसके स्नेह का स्पर्श पाकर आज सहसा मेरे जीवन में एक तूफान-सा आ गया है , उसकी आंखों के आंसुओं को होठों की मुस्कराहट में बदल सकूं — इसके

लिए अब सतत प्रयत्न करूंगा । और मैयुया , शायद प्रेरणा की यह पूंजी इन रूपयों से कहीं ज्यादा कीमत रखती है । " 95

शुक बोला :

यह फेन्टसी शैली में लिखी गयी एक नारी-चरित्र-प्रधान कहानी है । इसमें मैना और शुक के संवादों के द्वारा नारी के विभिन्न चरित्रों की बात , विशेषतः कल्पना देसाई के चरित्र की बात , कही गई है । बकौल मैना इसमें नारी के दोनों प्रकार के रूपों पर प्रकाश डाला गया है । " ये सब गुर , अष्ट-सिद्धि नव-निधि की दात्री इस मैना से सीख , बेवफ़ा तोते ! सच कहती हूं कि उपन्यास लिखने बैठूं , तो "जां क्रिस्तोफ " से भी अधिक अच्छा उपन्यास लिख डालूं । मनुष्य के काले कारनामों के जितने रूप मैंने देखे हैं , उतने किस मानव-कृतिकार ने कहां देखे होंगे ? अपनी उद्दाम वासना की बलिवेदी पर साम्राज्यों और सम्राटों की समिधा जलानेवाली क्लिओपेट्रा से लेकर , अपने पति की मर्यादा की रक्षा के लिए , राज-सुख तज , वन जाने वाली सीता , पति के प्राणों की भिक्षा मांगने के लिए यम के साथ जानेवाली सावित्री का इतिहास मुझसे पूछ । .... दुष्यन्त की वल्कल-वसना शकुन्तला का-सा सौम्य वेश में संवार सकती हूं , तो ऊंची एड़ी के सैंडिल पर , अधखुला ब्लाउज पहन , उछलती-कूदती , कमर मटकाती चलती जोन साहब की बीबी मालिना सेन को भी मैं मात दे सकती हूं । एक सीढ़ी उतरते ही , " उई मां , मर गई ! " कहकर , मासूमियत के साथ , अपने सूटेड-बूटेड साजन की कमर थाम लेने वाली मिस किसमिस के-से नखरे मेरे पास हैं , तो झांसी की रानी के-से जौहर भी दिखा सकती हूं । ... घर में अपने पति का चरणामृत पीकर , पति के घर से बाहर जाते ही , दूसरे-दूसरे रसिक बाबुओं के साथ जुहू-चौपाटी विचरण के लिए जानेवाली "सावित्रीबाई " का कैरेक्टर भी मैं निभा सकती हूं ।" 96 इसके जवाब में शुक बम्बई महानगरी के सेठ पावसजी कावसजी की कथा सुनाता है । इस कथा की नायिका है कल्पना देसाई । उसका पिता

अहमदाबाद में एक मामूली मिल-मजदूर था । पर कल्पना अत्यन्त सुन्दर और तेजस्वी थी । पहले उसने माणिकजी तोरणजी के रंगीले पुत्र-रत्न मनहर को फांसा । मनहर के यहां दो साल सोने का चारा चुगकर बड़ौदा के दादूभाई के साथ फुर्र हो गई । दादू ने उसे मुंगरापाड़ा के जम्मू दादा को सौंप दी । जम्मू दादा ने उसे मटन-कबाब खिलाकर खूब संवारा-सजाया कि एक दिन "एक्स्ट्रा-सप्लायर" मीनू मिस्त्री की नज़र उस पर पड़ गई । एक दिन संयोगवश मीनू उसे हीरे-जवाहरात के व्यापारी पावसजी सेठ के पास ले गया तो 25 हजार का हार मुफ्त में लेकर कल्पना पावसजी के गले का हार बन गई । कल्पना के मोहपाश में अंधे होकर पावसजी ने "सोने का पंछी" फिल्म बनायी । इसमें पावसजी सेठ के "सोने के पंछी " फुर्र हो गये । उसके बाद एक दूसरे डायरेक्टर को चार महीने तक अपने सुनहरे दिन और रुपहली-रातें सौंपकर "कल्पना-सिने-सोसायटी " के लिए "बरबादी" फिल्म का निर्माण करवाया । नतीजा यह हुआ कि पावसजी आज ज्वैलर्स की दूकान बेचकर चौपाटी में भेल-पूरी की दूकान चला रहा है । "बरबादी" जब अहमदाबाद में लगी तो कल्पना का पुराना प्रेमी मनहर "माय डार्लिंग कल्पना" कहता हुआ बम्बई पहुंचा । मनहर कल्पना के पीछे पागल हो चुका था । उसने बम्बई आकर कल्पना का गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी । [97]

आदि और अन्त :

प्रस्तुत कहानी पत्र और विवरण शैली का मिश्रण है । कहानी की नायिका है — शैलजा जोशी , एक गरीब ब्राह्मण-कन्या । कहानी का नायक देवेश पांडेय उसे चाहता है । परन्तु अलमोड़ा के टी.बी . अस्पताल में कलकत्ता से एक मरीज आता है — पूर्णिमादत्त बंदोपाध्याय । उसका बाप लखपति था । देवेश के जीवन-चन्द्र को वह राहु की तरह ग्रस गया । शैलजा के पिता को उसने एक हजार रुपये बतौर कर्ज दिए और उसमें वह शैलजा को पूर्णिमादत्त के लिए कलकत्ता ले गया । परन्तु

वह तो शैलजा के लिए अमावास्यादत्त साबित हुआ । कलकत्ता लौटते ही वह काल की गोद में सो गया । शैलजा घरवालों के लिए "राक्षसी" और "पिशाचिनी" बन गई । उसके ससुर की उस पर बुरी नज़र थी । वह दिनमें उसे गालियाँ देता और रात में कहता — " चल तुझे अपने लखनऊ वाले मकान में पहुंचा आऊं ? वहाँ तू मजे में रहेगी । मैं कभी-कभी वहाँ आया करूंगा । " [98] ससुर की ऐसी गंदी बातों से तंग आकर रंडुवे के साथ भाग जाती है । वह उसे इलाहाबाद में एक हजार रूपयों में बेच देता है और यहां से शुरू होता है शैल का वेश्या-जीवन । एक दिन अचानक शैल "विवेक" का अंक खरीदती है । उसका संपादक देवेश ही था । अनेक संघर्षों के बाद वह अब लेखक हो गया था और एक पत्रिका का संपादन-कार्य कर रहा था । शैल उसे पत्र लिखती है और कहानी के अंत से संकेत मिलता है कि देवेश शायद उसे अपना लेता है । प्रस्तुत कहानी में देवेश के पात्र द्वारा नारी-चरित्र पर भी कुछ विचार हुआ है —" नारी के रूप में जो माँ बनकर अपने वक्ष के अमृत से हमारे जीवन-अंकुर को सींचती है । बहन बनकर राखी के पवित्र धागों से हमारे जीवन के चारों ओर स्नेह का जाल बुन देती है, और पत्नी बन कर, घर को स्वर्ग-सा बनाती है । और जब हम उसके मातृत्व को कुचल कर, उसे वेश्या बना डालते हैं, तब भी, समाज के सारे कूड़े को अपने आंचल में समेट लेती है । नारी विष पीती है, विष-वमन नहीं करती । उसके वक्ष से हमेशा अमृत ही झरता है । " [99]

दैट माई फादर बालजी :

इस कहानी में एक पागल का प्रलाप है जो लेखक ने भाई सुरेन्द्रकुमार पाल के साथ चर्चगेट से बांदरा जाते समय चलती ट्रेन में सुना था । [100] इसमें बम्बई के एक सेठ बालजी की कहानी है जो अपने पैसों की ताकत से अनेक स्त्रियों के साथ ऐश करता है । उसकी पत्नी बड़ौदा जिले के रतौड़ा गांव की है । इसके अलावा टाइपिस्ट

मैडम क्रिस्ताना , उसकी बहन मिस निवेदा जैसी अनेक स्त्रियों से उनके जिस्मानी रिश्ते हैं । कथा-नायक पागल की मां एक मराठी घाटन है । उसका नाम गंगाबाई है । वह गांव थिंगरी , तालुका रैंसी, जिला सतारा की है । बम्बई स्टोक-एक्सचेन्ज के नीचे केले मौसम्मी बेचती थी । उस समय वह बहुत सुन्दर थी । फिल्म एक्ट्रेस शान्ता आप्टे की बहन-सी लगती थी । बालजी सेठ का उस पर दिल आ गया और वे उसे एपोलो स्ट्रीट की सातवीं मंजिल पर ले आये । वहीं पर कथा-नायक पागल का जन्म हुआ था । गंगाबाई उसे लल्लन कहती थी । पर गंगाबाई के युवानी का मजा लेकर बाद में बालजी सेठ ने उसे छोड़ दिया । पर गंगाबाई ने कह दिया — " जेव्हां पर्यन्त मला माझा-माझा मुलगाचा हक्क नाहीं मिलेल , तेव्हां पर्यन्त मी तुमचा आश्रय तोडणार नाहीं " अर्थात् जब तक मुझे मेरा और मेरे बच्चे का हक नहीं मिलेगा , मैं आपका आश्रय नहीं छोडूंगी । [101] पर बालजी सेठ ने उसकी एक न सुनी । इसी लड़ाई में लड़का पागल हो गया और गंगूबाई फ्लोरा-फाउण्टन के पास भीख मांगने लगी । उसके बाद बालजी सेठ ने मिस निवेदा को भुलेश्वर में एक फ्लेट दिलवाया । इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में लेखक नने बम्बई के सेठों की ऐयाशी और उस ऐयाशी पर पलनेवाली औरतों का चित्रण किया है । मैडम क्रिस्ताना या मिस निवेदा जैसी स्त्रियाँ इनसे लाभ उठाती हैं और गंगाबाई जैसी भावुक स्त्रियाँ उनका भोग बनती हैं ।

बिट्ठल :

बम्बई के हजारों लावारिसों की तरहबिट्ठल की जिन्दगी भी फुटपाथ से शुरू हुई थी । बिट्ठल अपने को सतारा के नारायण की औलाद बताता है , पर बूढ़े ईरानी का कहना है कि वह करसन-दास जवेरी की बीबी सोमावती का फरजंद है । सोमावती पिल-हाउस की रुक्माबाई के पास आया करती थी , क्योंकि करसनदास

के पास लाखों के जवाहिरात थे , पर वे मोती न थे , जो एक पत्नी अपने पति से चाहती है । इन मोतियों की माला गूंथने सोमावती पिन-हाउस पर गना पठान के पास आया करती थी ।[102] इस कहानी में जहां एक तरफ सोमावती जैसी सेठानियों की कहानियां हैं , वहां दूसरी तरफ जसोदाबाई , रुक्माबाई , कुलसुम जैसी वेश्याओं का चित्रण उपलब्ध होता है । लंगड़ा उस्मान और बूढ़ा ईरानी बिट्ठल के उस्ताद है । उनसे छोटी उम्र में वह बहुत कुछ सीख जाता है । पहले वह वेश्याओं के पास ग्राहक ले जाता था , बाद में रुस्तम सेठने उसे अपने सिनेमा-हाल के सामने "बूम" मारने के लिए रख लिया । पर कुछ ही दिनों में सेठ रुस्तमजी फकीरजी को गठिया-वात ने पकड़ लिया । वाणगंगा रोड पर सेठ का आलिशान बंगला था । अब बिट्ठल की ड्यूटी बंगले पर लग गई । रुस्तमजी बिलकुल नंगे होकर उससे अपनी चम्पी करवाते थे । एक दिन सेठानी उसे फांस लेती है । बिट्ठल जब सेठानी को बताता है कि सेठ को कोई तकलीफ है , तब वह कहती है — " तकलीफ-वकलीफ कुछ नहीं है , अमेरे से बचने की तरकीब है । सेठ तो ' पावली-कम ' हो गया है ।"[103] इस प्रकार सेठ के साथ-साथ सेठानी को खुश रखने की ड्यूटी भी उसे बजानी पड़ती है । परन्तु एक दिन रुस्तम सेठ की बेटी रुस्तमा भी उसे बुलाती है । बिट्ठल पहले तो डरता है , पर रुस्तमा कहती है — " पिछले बरस भी पापाजी रत्नागिरि से एक रामा लेकर आए थे । वह पापाजी , बड़ी बाई और मेरे को — तीनों को संभालता था । "[104] उस पर बिट्ठल की हिम्मत खुलती है और वह बेबी को प्यार करने लगता है । परन्तु रुस्तमजी उसे पकड़ता है और "साला , हलकट , घाटी , बेईमान " कहता है । इस पर बिट्ठल कहता है —" हमारा का ईमान — धरम क्या , सेठ । फुटपाली पर पैदा होते हैं ... फुटपाली पर मर जाते हैं । ईमान-धरम वाले तो आप लोग हैं , सेठ । पर मैं पूछता हूं , जभी मैं तुमेरी नंगी ... की चम्पी करता रहा रात-रात भर , तभी तुम कुछ नहीं बोला ? फिर एक महीने तक तुमेरी राजीमंदी से सेठानी

का दिल बहलाता रहा , तभी तुम कुछ नहीं बोला ? येच तुमेरा ईमान-धरम है , तो थू है तुमेरे ईमान-धरम पर , सेठ । " [104] इतना कहकर बिट्ठल बंगले से नीचे उतर गया । इस प्रकार यह कहानी भी "जिसकी जरूरत नहीं थी " के कथ्य को अभिव्यक्त करती है । कुछ आलोचकों को मटियानीजी के इस कथा-संसार में अश्लीलता की बू आ सकती है , पर संसार इससे कहीं ज्यादा अश्लील है । इस सन्दर्भ में स्वयं मटियानीजी का कहना है — " मेरे लेखन में जो तथाकथित उग्रता , अभद्रता और अश्लीलता है , वह पूंजीवादी-व्यवस्था के अन्तर्गत होनेवाले शोषण के तरीकों से कहीं बहुत अधिक मर्यादित , शिष्ट और श्लील है । हिन्दी के अन्य लेखकों की तुलना में यदि मेरी रचनाओं में अधिक आक्रोश और बौखलाहट है , तो इसका एक मात्र कारण यह है , कि मैंने आर्थिक और नैतिक अव्यवस्थाओं के दुष्परिणामों को देखा-सुना ही नहीं है , प्रत्युत् सीधे स्वयं भोगा भी है । " [105]

एक कोप चा : दो खारी बिस्किट :

प्रस्तुत कहानी में नारी के दो रूपों को कथा-नायक रामन्ना दो कोटियों में विभक्त करता है — "फण्टूसी" और "मायूसी" । वैभव-विलासिता में डोलनेवाली विपुल वासनावतियों को वह "फण्टूसी" कहता है , और अपना या बच्चों का पेट पालने के लिए शरीर का सौदा करने वाली वेश्याओं को वह "मायूसी" कहता है । मीठाभाई मेन्शन की पांचवीं मंजिल पर रहनेवाली वीरमगाम वाली सेठानी जसोदाबेन पहली कोटि में आती है , तो एक कोप चा : दो खारी बिस्किट के लिए शरीर का सौदा करनेवाली नसीम दूसरी कोटि में । जम्मू दादा नसीम को बिरयानी-कोफ्ता खिलाने की बात करता है , पर वह उसके साथ नहीं जाती है । वह रामन्ना को प्यार करती है । पर रामन्ना कहता है कि उसके पास तो एक-मात्र "चौली" {दुअन्नी} है । वह नसीम को उन पैसों से पालन-भाजी

खाने के लिए कहता है । तब नसीम कहती है, हालांकि वह तीन दिन से भूखी है, — " ऊं हूं, अकेली कुछ नहीं खाऊंगी । चलो, पहिले तुम मेरे साथ मुहब्बत करो, फिर एक कोप या, दो खारी बिस्किट ले लेंगे ... अद्धा कप तुम पीना, अद्धा मैं पिऊंगी । एक बिस्किट तुम खाना, एक मैं खाऊंगी ... मगर पहले चल पुल के नीचे सोएंगे ... मुहब्बत करेंगे । " [106] और तब अचानक रामन्ना को अपनी बहन करावा की याद आती है । जब रामन्ना ने सुना कि करावा कई व्यक्तियों के साथ सो चुकी है, तब वह उसे जली-कटी बातें सुनाता है । उसके जवाब में करावा कहती है — " दुनिया वाले मुझ पर थूकते होंगे, लेकिन मैं तुम्हारे मुंह पर थूकती हूं, कि तुम्हारे जैसा भैंस-हाथी सरीखा भाई होकर भी मुझे रोटियों के लिए तन का सौदा करना पड़ता है, मन का खून करना पड़ता है । " [107] इतना कहकर करावा नागपुर एक्सप्रेस की ओर दौड़ पड़ी थी, और फिर उसकी लाश ही मिली थी । करावा की स्मृति के कारण रामन्ना भावुक हो उठता है और नसीम को अपनी बहन बना लेता है । इस प्रकार इस कहानी का कथ्य भी कुछ-कुछ "इन्लैस्वामी-" जैसा ही है ।

<u>फर्क, बस इतना है :</u>

प्रस्तुत कहानी लेखक के उपन्यास "कबूतरखाना" के कथ्य को संक्षेप में स्थापित कर रही है । इसमें बम्बई में काम करने वाले रामाओं की स्थिति पर एक खुला दृष्टिपात तो है ही, परन्तु बम्बई के तथा-कथित अभिजात वर्ग की ~~क्षियां~~ स्त्रियां कितनी पतनशील जिन्दगी जी रही हैं, उसे भी प्रकारान्तर से चित्रित किया गया है । कहानी का एक रामा सदू ~~देवरे~~ दूसरे रामा रग्घू से कहता है — " यार रग्घू । बरतन घिसते-घिसते हाथों में गड्ढे पड़ गये, पर सेठानी की फिसफिस और बेबीलोगों की "किसमिसों" से पिण्ड नहीं छूटता । जहां जाओ, प्यारे, घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं । इन कोठियों की चाकरी में सेठानियों की चूहेदानी से निकलो, तो सेठों के

पिंजरे में और इन दोनों से फुरसत मिले तो लेबीलोगों के कबूतरखाने में । मैं तो तंग आ गया हूं । " 108

हमपेशा :

वैसे तो यह एक व्यंग्य कहानी है, जिसमें प्रगतिशील कहे जाने वाले लेखकों पर करारा व्यंग्य किया गया है ; परन्तु उसमें हमें नारी के दो रूप मिलते हैं । एक रूप है मिस कंचन का, जो लेखक को केवल पैसों के लिए प्रेम करती है । यथा — " लेखक ने अपनी महान कमाई के पचास रूपये मिस कंचन, बीस उसको खाला, तीस उसके चचेरे भाई अब्दुल को "एडवांस" दे दिए थे, जिनकी निगरानी में मिस कंचन सोने के अण्डे दे रही थी और जवानी शुरू हो जाने के बरहxबरि सोलह बरस बाद भी "मिस" ही बनी हुई थी । " 109 दूसरी ओर एक नौकरानी बाई है जो अपनी बच्ची के लिए दर-दर की ठोकरें खाती है । लेखक जब उसे उसकी तनखाह के पैसे नहीं देता तब उसका पुण्यप्रकोप फूट पड़ता है —" मेरे बच्चे बिलख रहे हैं । मेरी बेटी बुखार से दम तोड़ रही है । दवा के बिना उसकी जान जा रही है ... और तुम हो कि दिन भर शराब की बोटलें खाली करते हो ... अपनी आशनाओं के लिए बेहतरीन चोली, ब्लाउजों, साड़ियों के बण्डल खरीदते हो ... पर मुझ गरीब को तनखा देने को पैसे नहीं ? तुम राक्षस हो ..." 110 यह भी स्त्री का एक रूप है । यह वही स्त्री है जो एक पतित भिखारी को मनुष्य बनाती है ।

पत्थर :

"पत्थर" कहानी की गफूरन एक नेकदिल बावफा पत्नी है । उसका पति रमजानी एक नंबर का कामचोर और निखट्टू है । उसे देख कर "कफन" कहानी के घीसू और माधव की याद ताजा हो जाती है । गफूरन मेहनत-मजदूरी करके रमजानी को खिलाती-पिलाती है । उसके पान-सिगरेट और शराब के शौक पूरे करती है । गफूरन हमेशा दुआ

करती – " या अल्ला , रसूल , उन्हें राजी–खुशी ~~खखम~~ रखना । " 111 ब्रजभाषा की एक कहावत है – " ऐसे पे तो ऐसो , काजर दूं तो कैसो ? " अर्थात् रमजानी जैसे निखट्टू के लिए जब ऐसे भाव हैं , तो अगर कोई ढंग का आदमी मिला होता तो न जाने वह क्या करती । अपने ऐसे हरामखोर स्वभाव के कारण रमजानी बच्चा नहीं चाहता था , पर एक बार अहमदिया टोंचा मार देता है कि बीबी के बेटा पैदा करना कोई पान चबाकर थूक ~~देमx~~ देने जैसा काम नहीं है । यह काम तो मरदों का है । और रमजानी को यह बात लग जाती है । वह जी–जान से गफूरन को प्यार करता है और कुछ ही दिनों में पता चलता है कि अब कपड़ों से नहीं होती । रमजानी सैफू मिस्त्री को पालने का आर्डर देता है और मदीना चाची को भी खबर कर देता है कि वह बच्चा जनाने को तैयार रहे और बच्चे के लिए एक गरम टोपी बनाकर तैयार रखे । पर कुछ दिनों के बाद जब गफूरन मेहनत–मजदूरी के काबिल नहीं रही और मटन–बिरयानी की जगह जब दाल–रोटी के लाले पड़ने लगे तो रमजानी अहमदिया को कोसने लगा । बेटा हुआ , पर उसकी कोई खुशी रमजानी को न हुई । उसके तो सारे अरमानों पर पानी फिर गया , इसलिए बच्चे का नाम रखा — " पत्थर " । बच्चा भी बगैर दूध–रोटी के भूखों मरने लगा । ऐसे में पड़ोस के कादर मियां ने रमजानी के आगे प्रस्ताव रखा कि वह बच्चे को उन्हें भीख मांगने के लिए दे दे । कादर मियां लंगड़े थे । सोच रहे थे बच्चा मिल जाय तो उनको भीख ज्यादा मिलेगी । पहले तो गफूरन तैयार नहीं हो रही थी , पर बाद में सोचने लगी कि बच्चा भूख से मर जाये उससे तो अच्छा है कि कादर मियां की बात मान लें । कादर मियां अपनी बात के पक्के थे । हररोज रात को बच्चा लौटा देते थे । गफूरन को चवन्नी देते कि इसे रमजानी से बचाकर रखना और बाकी की तयशुदा रकम याने एक रूपया रमजानी को देते । पर रमजानी का लोभ बढ़ गया । उसने गफूरन को कहा कि वह खुद बच्चे को लेकर भीख मांगे । गफूरन को यह पसंद नहीं था , पर

"गफूरन खुदा से लड़ लेगी , पर अपने शौहर से न लड़ेगी । "[112] पर अपने शील-संकोची स्वभाव के कारण पांच-सात रूपयों की जगह उतने आने भी नहीं जुट पाते थे , क्योंकि लोग बच्चे से ज्यादा बच्चे की माँ को देखते थे । तब एक दिन रमजानी कहता है — " खुदा के बन्दे रह कहाँ गये हैं , बेगम ? ... खामोश बच्चे को तो माँ भी नहीं दूध पिलाती है । कहती कि इस बच्चे का बाप मर गया है ।[113] यह सुनना था कि गफूरन ने आव देखा न ताव , रमजानी के मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया । रमजानी गम के आँसू पी गया और दूसरे दिन खुद बच्चे को लेकर निकल पड़ा बम्बई की लाकल ट्रेनों में भीख मांगने । ट्रेन में रमजानी के बच्चे ने एक दूसरे बच्चे का बैलून फोड़ दिया । उस पर उस बच्चे के बाप ने रमजानी के बच्चे को एक करारा थप्पड़ लगा दिया । और तब रमजानी ने बिना इधर-उधर देखे उस आदमी को चार तमाचे तड़ातड़ जड़ दिए — " मेरे बेटे पर हाथ उठाता है ? तोड़ डालूंगा तेरे हाथ-पांव । भिखारी होगा , तेरा बाप । " और अपनी बीड़ियों के लिए बचाए हुए दो आने उसके मुंह पर मारकर रमजानी अगले स्टेशन पर उतर गया । इस घटना के बाद रमजानी बदल गया । वह मिल में नौकरी करने लगा । गफूरन अपने खुदा को — शाविन्द को जी-जान से प्यार करने लगी ।

बत्तीस दाँतों को टकराने वाला पहाड़ी सेव :

बिहारी रामपुर के प्रसिद्ध धनी आढ़ती सूरजमल अग्रवाल का सबसे छोटा बेटा है । कई ट्रायलों के बाद वह बी.ए. करता है । पिता चाहते थे कि वह एल.एल.बी. कर ले तो उनके बिजनिस में सहायता रहेगी । पर वह "माइण्ड की वीकनेस " का बहाना करके अपने दोस्त प्यारे के साथ नैनीताल चला जाता है । प्यारे एक रिफ्यूजी था और अल्मोड़ा, नैनीताल , बरेली जैसे शहरों में घूम-घामकर अब रामपुर में बस गया था । वह बिहारी को समझाता है कि प्यार और रोमान्स का असली मज़ा तो पहाड़ों में होता है । शहरी

औरतें तो खुलेआम-सी होती हैं । रामपुर में तो टोंटी घुमाओ तब पानी आता है, पहाड़ों में तो पानी के सोते अपने-आप फूटते रहते हैं और ऐसी-ऐसी बातें करके वह बिहारी को नैनीताल के "स्नो-व्यू" होटल में ले आता है । बहुत हाथ-पांव मारने पर भी प्यारे कुछ पेशे-वर हुड़क्यानियों को ही बुला पाता है । अंततः बिहारी वापिस लौट जाने का विचार करता है, परन्तु एक दिन झील की सैर करते हुए वह चम्पुली नामक एक पहाड़ी युवती को मरने से बचा लेता है । चम्पुली का पति गंगादत्त नैनीताल में किसी साहब के यहां अर्दली था । इस घटना से बिहारी उस दम्पति के परिचय में आता है । चम्पुली का सौन्दर्य बिहारी को खूब अभिभूत करता है और उसके मन में उसे भोगने की लालसा जगती है । वह कोई-न-कोई बहाने से गंगादत्त के क्वार्टर पर जाता है । उन्हें भेंट-सौगातों द्वारा खुश करने की चेष्टा करता है, क्योंकि उसने सुन रखा था कि "ये पहाड़ी दरिद्र होते हैं । इनकी औरतों को फांसना हो, तो पहले इन्हें खूब खिलाओ-पिलाओ ।" [114] और एक दिन वह मौका देखकर उसे छेड़ने की चेष्टा करता है, तब चम्पुली थप्पड़ों और घूंसों से उसका स्वागत करती है । उसके बत्तीसों दांतों पर मानो हथौड़े पड़ते हैं और तब बिहारी सोचता है — "पहाड़ की औरत और पहाड़ का खट्टा सेब, पहाड़ की हर चीज बत्तीस दांतों को आपस में टकराने वाली होती है ।" [115]

कीर्तन की धुन :

लेखक मलाड छोड़कर अपनी पत्नी नीला के साथ जोगेश्वरी गुफा के पास ज्ञानानंद ब्रह्मचारी की चाल में रहने जाते हैं । यहां पिंजरानुमा कमरों में लोग रहते हैं । बच्चे खूब हैं । पास ही एक श्मसान है, जहां मुर्दा आता है तो "रघुपति राघव राजा राम" की धुन शुरू हो जाती है । ऐसे में सावंत पुणेकर की बीबी आधी रात को

कीर्तन शुरू कर देती है । नीला ने बताया कि उसे "माहेरची देवी " {मायके की देवी } आती है । यह देवी बराबर तभी आती थी , जब सावंत आधी रात को शराब पीकर मिल से आता था । सावंत की बीबी शान्ताबाई को जब बच्चा हो गया , उसके बाद उसका कीर्तन भी बन्द हो गया । वस्तुतः बात यह थी कि सावंत की बीबी शान्ताबाई महीनों से थी और सावंत भारी डील-डौल वाला मजबूत आदमी था , सो उससे बचने के लिए उसने यह नाटक रचाया था ।[116] यहाँ नारी-जीवन की इस करुणता को रेखांकित किया गया है कि कैसे-कैसे नर-पिशाचों से उसे पाला पड़ता है और उसके लिए उसे कैसे-कैसे ढोंग रचाने पड़ते हैं ।

महाभोज :

यह कहानी "छिद्दा पहलवान वाली गली " तथा "भविष्य तथा अन्य कहानियाँ " उभय कहानी संकलनों में पायी जाती है । इस कहानी की शिवरती एक जुझारू , जीवट वाली , परिश्रमी और संवेदनशील नारी है । शिवरती को देखकर मंजुल भगत कृत अनारो को अनारो की स्मृति ताजा हो जाती है । उसका पति चेतराम शराबी-कबाबी है । सात महीनों से मियादी बुखार में पड़ा था । घर-गृहस्थी का बोझ शिवरती ने ही उठा रखा था । चेतराम का बाप आखिरी घड़ियाँ गिन रहा था । शिवरती के चार बच्चे हैं और पाँचवे से है । चेतराम को शरीर-सुख की इच्छा होती है , तब शिवरती कहती है — " मोती के बापू , दम तोड़ते बाप की नाक के नीचे बेहयाई ठीक नहीं । आन-औलाद पर बुरा असर पड़ता है । "[117] चेतराम शिवरती को कुछ नहीं कह सकता , क्योंकि वह एक भली औरत है और "जूतों का मारा हुआ सिर उठा सकता है , भलमनसाहत का मारा नहीं ।"[118] चेतराम जब शिवरती से कुछ पैसे मांगता है कि जी बहुत बेसा हो रहा है तो मीरगंज वाली

सलोमा [वेश्या] के पास हो आऊँ, तो बिना कुछ बोले तीन रूपये उसके हाथ पर रखते हुए बोली — " तुममें लम्बी बीमारी के मारे बर्दाश भी हो ना रही । "[119] और जब चेतराम का बाप मर जाता है तब अपनी पचास तोला चाँदी की करधनी बेचकर उसका सारा क्रिया-कर्म भली-भाँति निबटाती है — " मोती के बाबू, अपने पेट का रोना तो जिनगी-भर का लगा हैगा, मगर बाप तो रोज नाहीं मरेगा न ? जिस औरत के जीते-जी उसके मरद की नाक जाती रहे, उसका तो बावड़ी में डूब मरना भला । तुम कोई फिकर मती करो । "[120]

अहिंसा :

"अहिंसा" कहानी की बिन्दा भी "महाभोज" की शिवरती की भाँति एक अविस्मरणीय नारी-पात्र है । तागे में लगी घोड़ी की भाँति दिन-रात वह घर-गृहस्थी के कामों में लगी रहती है । मेहनत-मजदूरी करके बच्चों का पेट पालती है । उसे कैंसर हो जाता है । जगेसर पैसों का जुगाड़ करके उसे शहर ले जाता है, आपरेशन के पैसे भी एडवान्स में दे आता है, पर डाक्टरों की हड़ताल के कारण आपरेशन समय पर नहीं हो पाता है और बिन्दा दम तोड़ देती है । डा. गुदौलिया एडवान्स के पैसे हड़प कर जाता है । जगेसर अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और डाक्टर गुदौलिया के सिर पर बसूला पूरी ताकत से दे मारता है ।[121]

सफर पर जाने से पहले :

यह कहानी "सफर पर जाने से पहले " तथा "चील" इन दोनों कहानी-संग्रहों में संकलित है । इसका वस्तु मनोवैज्ञानिक है । कहानी का नायक जसवंत अभी बाबू संगमलाल के यहाँ रहता था । संगमलाल निहायत ठण्डे किस्म का आदमी था । जसवंत और मिसेज

संगम में शारीरिक संबंध स्थापित हो जाता है । मिसेज संगम में गजब का यौनाकर्षण { सेक्स-अपील } था । उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक रहती थी । एक बार रात्रि के समय वह जसवंत को पानी देने आती है और उसकी ×अंगुलि× अंगुली का स्पर्श हो गया था । उसके यह पूछने पर कि कोई और चीज की जरूरत तो नहीं है , विचार-शून्यता की मनःस्थिति में वह बोल उठता है — " अगर कहीं आप की ही जरूरत पड़ जाये ... " [122] और फिर तो मिसेज संगम कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेती थी । बल्कि एक बार तो संगमलाल दोनों को चूमते हुए देख भी लेते हैं , पर दो में से किसीको कुछ नहीं कहते । अब जसवंत अपनी पत्नी के साथ इलाहाबाद में रहता है और संगमबाबू का पत्र आया है कि वे कुछ दिन उसके यहाँ ठहरने वाले हैं । जसवंत की नौकरी दौरे की है और उसे दौरे पर जाने का है । अतः अपनी पत्नी को लेकर उसे तरह-तरह के विचार आते हैं । कमलेश्वर के उपन्यास "तीसरा आदमी" का वस्तु लगभग इसी प्रकार का है ।

अन्य कहानियाँ :

पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि मटियानीजी की अधिकांश×× अधिकांश कहानियाँ "मेरी तैंतीस कहानियाँ " तथा "बर्फ की चट्टानें " { बड़ा संस्करण } में संकलित हैं । इन दो संग्रहों में आयी हुई कहानियाँ अन्यत्र दूसरे कहानी-संग्रहों में कई-कई बार पुनर्मुद्रित हुई हैं । आलोच्य कहानियों के अतिरिक्त निम्नलिखित कुछ कहानियाँ हैं जिनमें नारी का चित्रण कहीं-कहीं हुआ है — "भेड़ें और गड़रिये " , " हाथी दांत की मिनार " , "शरण्य की ओर", "उत्सव के बाद " , "वापसी" , "हत्यारे " {भेड़ें और गड़रिये} ; "दुर्घटना" , "मोहभंग" , " हारा हुआ " { चील } ; "छिद्दा पहलवान वाली गली " , "दोधा " , "शरीफों का मुहल्ला " { छिद्दा पहलवान वाली गली } ; "सदाशयी बाबू " , "भाषा"

"जुलूस" , "बिंदु अंकन " , (अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ) ; नाच , जमूरे नाच " (भविष्य तथा अन्य कहानियाँ) ; "घोड़े", ब्राह्मण" , संस्कृति" (हारा हुआ) ; " सुख " , "नियति" , "सीढ़ियों पर अटका अतीत " , "तीसरा सुख " (सफर पर जाने से पहले) ; "नाबालिग" , "संस्कार" , "शीशे के पार " , "एक बदलता हुआ परिदृश्य " , "निर्णय ले चुकने के बाद " , "पतझड़ के मौसम में " (पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ) ; "सहानुभूति", असुविधा" , "योद्धा" (अतीत तथा अन्य कहानियाँ) ; "अंतिम तृष्णा " , "भय " , (सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ) । इनमें से अधिक कहानियाँ मनोवैज्ञानिक प्रकार की हैं और आत्म-संभाषण शैली में लिखी गयी हैं । इनमें नारी-चरित्र का उल्लेख कहीं-कहीं हुआ है जिनकी ~~xxxx~~ चर्चा आगे के अध्यायों में यथेष्ट स्थान पर होगी ।

<u>निष्कर्ष :</u>

(1) मटियानीजी की अधिकांश कहानियाँ "मेरी तैंतीस कहानियाँ " तथा " बर्फ की चट्टानें " (बड़ा संस्करण) नामक दो कहानी-संग्रहों में संकलित हुई हैं ।

(2) उनकी ~~xxxxxx~~ कई कहानियाँ एकाधिक कहानी-संग्रहों में पुनर्मुद्रित हुई हैं ।

(3) उनकी अधिकांश कहानियाँ पहाड़ी ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखी गई हैं , जिनका अपरागत (फर्स्ट हैण्ड) अनुभव उन्हें है । अतः ये कहानियाँ यथार्थ के निकष पर खरी उतरती हैं ।

(4) मटियानीजी की कहानियों में बम्बई , दिल्ली , इलाहाबाद , अल्मोड़ा , नैनिताल , कलकत्ता आदि नगरों का परिवेश भी मिलता है ।

(5) मटियानीजी की कहानियों में नारी-चरित्र की विविधता परिलक्षित होती है । उसमें नगर-ग्राम , निम्नवर्ग-सम्भ्रान्त

वर्ग , शिक्षित-अशिक्षित , हिन्दू-मुस्लिम-पारसी-ईसाई , गृहस्थिन-कामकाजी आदि नारी के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व उपलब्ध होता है ।

§6§ मटियानीजी ने नारी के अच्छे-बुरे दोनों रूपों का निरपेक्ष-भाव से चित्रण किया है ।

§7§ नारी के सभी रूप — माता , बहिन , पत्नी , प्रेयसी , पुत्री , सामान्या — यहां विद्यमान हैं ।

XXXXXXXX

:: सन्दर्भानुक्रम ::

(1) बर्फ की चट्टानें : बड़ा संस्करण : शैलेश मटियानी : भूमिका : पृ॰ 13 ।

(2) वही : पृ. 9 ।

(3) वही : पृ. 11 ।

(4) वही : पृ॰ 11 ।

(5) मेरी तैंतीस कहानियां : शैलेश मटियानी : भूमिका : पृ. 2 ।

(6) वही : पृ. 25 ।

(7) पोस्टमैन (कहानी) : बर्फ की चट्टानें : बड़ा संस्करण : पृ. 19-20

(8) वही : वही : पृ. 23 ।

(9) वह तू ही था : ब.च. : पृ॰ 28 । *

(10) लीक : ब.च. : 46-47 ।

(11) भँवरे की जात : ब.च. : पृ. 57-58 ।

(12) लोकदेवता : ब.च. : पृ॰ 64 ।

(13) बर्फ की चट्टानें (कहानी) : ब.च. : पृ. 71 ।

(14) वही : वही : पृ. 73-74 ।

(15) चिट्ठी के चार अक्षर : ब॰च॰ : पृ. 77 ।

(16) उसने तो नहीं कहा था : ब.च. : पृ. 88 ।

(17) वही : वही : पृ. 88 ।

(18) सीने में धँसी आवाज़ : ब.च. : पृ. 98 ।

(19) दशरथ : ब.च. : पृ. 128 ।

(20) सतजुगिया आदमी : ब.च. : पृ. 137 ।

(21) घर-गृहस्थी : ब.च॰ : पृ. 144-145 ।

---

* बर्फ की चट्टानें = ब.च. । पहले कहानी का उल्लेख हुआ है , बाद में कहानी-संग्रह का ।

§22§ नंगा : ब.च. : पृ. 165 ।

§23§ सावित्री : ब.च. : पृ. 170 ।

§24§ वही : वही : पृ. 174-175 ।

§25§ कालिकावतार : ब.च. : पृ. 192 ।

§26§ वही : वही : 196 ।

§27§ अंतिम तृष्णा : ब.च. : पृ. 208 ।

§28§ आकाश कितना अनंत है : ब.च. : पृ. 227 ।

§29§ पुरखा : ब.च. : पृ. 233 ।

§30§ वही : वही : पृ. 234 ।

§31§ काला कौआ : ब.च. : 241 ।

§32§ मु नेताजी की चुटिया : ब.च. : पृ. 286 ।

§33§ झुरमुट : ब.च. : पृ. 252 ।

§34§ एक शब्दहीन नदी : ब.च. : पृ. 261 ।

§35§ खरबूजा : ब.च. : पृ. 328 ।

§36§ बित्ता भर सुख : ब.च. : पृ. 342 ।

§37§ संस्कार : ब.च. : पृ. 374 ।

§38§ भस्मासुर : ब.च. : पृ. 392 ।

§39§ वही : वही : पृ. 392 ।

§40§ चुनाव : ब.च. : पृ. 427 ।

§41§ वही : वही : पृ. 429 ।

§42§ पापमुक्ति : ब.च. : पृ. 429 ।

§43§ पुरोहित : ब.च. : पृ. 461 ।

§44§ वही : वही : पृ. 462 ।

§45§ सुहागिनी : ब.च. : पृ. 482 ।

§46§ वही : वही : पृ. 489-490 ।

§47§ वही : वही : पृ. 490 ।

§48§ असमर्थ : ब.च. : पृ. 525 ।

§49§ अर्द्धांगिनी : ब.च. : पृ. 606 ।

§50§ वही : वही : पृ. 605 ।

§51§ वही : वही : पृ. 614 ।

§52§ छाक : ब.च. : पृ. 564 ।

§53§ वही : वही : पृ. 581 ।

§54§ हलाल : ब.च. : पृ. 548 ।

§55§ मिसेज ग्रीनवुड : ब.च. : पृ. 415 ।

§56§ वही : वही : पृ. 415 ।

§57§ वही : वही : पृ. 416 ।

§58§ वही : वही : पृ. 418 ।

§59§ कपिला : ब.च. : पृ. 327 ।

§60§ वही : वही : पृ. 386 ।

§61§ दो दुःखों का एक सुख : ब.च. : पृ. 545 ।

§62§ रहमतुल्ला : ब.च. : पृ. 349 ।

§63§ आकाश कितना अनंत है : ब.च. : पृ. पृ. 222 ।

§64§ वही : वही : पृ. 222 ।

§65§ वही : वही : पृ. 227 ।

§66§ गोपुली गफूरन : ब.च. : पृ. 176 ।

§67§ वही : वही : पृ. 177 ।

§68§ वही : वही : पृ. 177 ।

§69§ वही : वही : पृ. 183 ।

§70§ वही : वही : पृ. 188 ।

§71§ चील : त्रिज्या : पृ. 101 ।

§72§ वही : वही : पृ. 103 ।

§73§ मैमूद : त्रिज्या : पृ. 104-105 ।

§74§ वही : वही : पृ. 113 ।

§75§ प्यास : त्रिज्या : पृ. 117 ।

§76§ प्यास : त्रिज्या : पृ. 117 ।

§77§ इब्बू मलंग : त्रिज्या : पृ. 150 ।

§78§ वही : वही : पृ. 151 ।

§79§ वही : वही : पृ. 157 ।

§80§ वही : वही : पृ. 157/8 ।

§81§ भय : त्रिज्या : पृ. 160 ।

§82§ मिट्टी : त्रिज्या : पृ. 174 ।

§83§ वही : वही : पृ. 179-180 ।

§84§ वही : वही : पृ. 181 ।

§85§ भविष्य : त्रिज्या : पृ. 185 ।

§86§ वही : वही : पृ. 194 ।

§87§ भावना की सत्ता : मेरी तैंतीस कहानियाँ : पृ. पृ. 4 । *

§88§ इल्लेस्वामी : मे. तैं. क. : पृ. 15 ।

§89§ वही : वही : पृ. 16 ।

§90§ जिसकी जरूरत नहीं थी : मे. तैं. क. : पृ. 20 ।

§91§ किसीसे न कहना : मे. तैं. क. : पृ. 26 ।

§92§ चिथड़े : मे. तैं. क. : पृ. 37 ।

§93§ बिजली के फूल : काव्य-संग्रह : डा. पारूकांत देसाई : पृ.

§94§ प्रेरणा की पूंजी : मे. तैं. क. : पृ. 50 ।

§95§ वही : वही : पृ. 53 ।

§96§ शुक बोला : मे. तैं. क. : पृ. 59 ।

§97§ वही : वही : पृ. 60-62 ।

§98§ आदि और अन्त : मे. तैं. क. : पृ. 66 ।

---

* मेरी तैंतीस कहानियाँ : मे. तैं. क.

§99§ आदि और अन्त : मे.तैं.क. : पृ. 69 ।

§100§ दैट माई फादर वेलजी : मे.तैं.क. : पृ. 73 ।

§101 § वही : वही : पृ. 72 ।

§102§ विट्ठल : मे.तैं.क. : पृ. 74 ।

§103§ वही : वही : पृ. 79 ।

§104§ वही : वही : पृ. 80 ।

§105§ भूमिका : मे.तैं.क. : पृ. 25 ।

§106§ " एक कोप चा : दो खारी बिस्कुट" : मे.तैं.क. : पृ. 84 ।

§107§ वही : वही : पृ. 86 ।

§109§ हमपेशा : मे.तैं.क. : पृ. 133 ।

§108§ फर्क बस इतना है : मे.तैं.क. : पृ. 106 ।

§110§ हमपेशा : मे.तैं.क. : पृ. 137 ।

§111§ पत्थर : मे.तैं.क. : पृ. 141 ।

§112§ वही : वही : पृ. 145 ।

§113§ वही : वही : पृ. 145 ।

§114§ बत्तीस दाँतों को टकरानेवाला पहाड़ी सेव : मे.तैं.क. :पृ.173

§115§ वही : वही : पृ. 174 ।

§116§ कीर्तन की धुन : मे.तैं.क. : पृ. 183 ।

§117§ महाभोज : छिद्दा पहलवान वाली गली : पृ. 32 ।

§118§ वही : वही : पृ. 33 ।

§119§ वही : वही : पृ. 34 ।

§120§ वही : वही : पृ. 40 ।

§121§ अहिंसा : अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 45 ।

§122§ सफर पर जाने से पहले : सफर पर जाने से पहले : पृ. 15 ।

xxxxxxxx